लोक कथाओं में भालू

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title: Lok Kathaon Mein Bhalu (Bear in Folktales)
Cover Page picture: Bear With a Small Tail
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2017

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
लोक कथाओं में भालू 5
1 भालू ने अपनी पूँछ कैसे खोयी 7
2 भालू ने अपनी पूँछ कैसे खोयी–2 13
3 भालू ने मॉस खाना कैसे सीखा 19
4 भालू जाड़े भर क्यों सोता है 28
5 आदमी आग का मालिक कैसे बना 33
6 एक लड़का जो भालुओं के साथ रहा 37
7 भालू आदमी 50
8 बैला और भालू 59
9 भालू का बुरा सौदा 67
10 बहुत सारे बच्चों की दादी 78
11 छोटी बूढ़ी दादी 84
12 चिपमंक और भालू 89

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

लोक कथाओं में भालू

संसार में सभी देशों में भालू की कहानियॉ बहुत लोकप्रिय हैं और बहुत सारी हैं। कुछ कथाऐं उसकी अक्लमन्दी की हैं तो कुछ उसकी बेवकूफी की। आज हमने इस पुस्तक में तुम्हारे लिये भालू की ऐसी ही कुछ कहानियॉ इकट्ठी की हैं। तो लो तुम खुद भी पढ़ो ये कहानियॉ और दूसरों को भी सुनाओ।

1 भालू ने अपनी पूँछ कैसे खोयी[1]

भालू के पूँछ खोने की यह लोक कथा नौर्स देशों के पॉच देशों में से नौर्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बच्चो, क्या तुम जानते हो कि भालू करीब करीब हर जानवर पर जो भी उसको जंगल में मिलता है क्यों गुर्राता है? वह ऐसा हमेशा से नहीं था।

पहले जब भी कोई उसके पास आता था तो उसको देख कर वह बड़े दोस्ताना अन्दाज़ में अपनी लम्बी पूँछ हिलाता था जैसे कि कुत्ते हिलाते हैं और बहुत प्यार से बात करता था।

पर आजकल? आजकल ऐसा नहीं है। तो फिर वह ऐसा कैसे हुआ?

तो हुआ यों कि एक बार जाड़े के एक दिन में एक मछियारे ने बहुत सारी मछलियॉ पकड़ीं और उन सबको एक रस्सी में बॉध कर पानी में वहीं छोड़ दिया ताकि वे ताजा रहें।

चालाक लोमड़े ने यह देख लिया कि मछियारे ने मछलियॉ पकड़ीं और उनको पकड़ कर पानी में ही छोड़ दीं और वह चला

[1] How Bear Lost His Tail? – a folktale from Norway, Europe. Adapted from the Web Site http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=63
Retold and written by Mike Lockett.

गया। सो जब वह मछियारा उधर नहीं देख रहा था तो उसने उसकी उन मछलियों को चुरा लिया और उनको ले कर घर चल दिया।

घर जाते समय उसको रास्ते में बैठा एक भालू दिखायी दे गया। भालू ने लोमड़े को बहुत सारी मछलियॉ ले जाते देखा तो उसको देख कर उसने अपने दोस्ताना अन्दाज में उसकी तरफ अपनी पूँछ हिलायी।

उसको वे मछलियॉ देखने और खुशबू में बहुत ही अच्छी लग रहीं थीं सो भालू ने लोमड़े से पूछा — "लोमड़े भाई, ये मछलियॉ तुमको कहॉ से मिलीं?"

लोमड़े ने झूठ बोला — "मिलेंगी कहॉ से? मैंने इनको पकड़ा है।"

असल में लोमड़े को बहुत शरम आ रही थी क्योंकि उसको लगा कि भालू ने उसको वे मछलियॉ चुराते हुए देख लिया था। पर ऐसा कुछ नहीं था। भालू को तो यह पता ही नहीं था कि लोमड़े ने ये मछलियॉ चुरायी थीं।

भालू ने फिर पूछा — "लेकिन तुमने इनको पकड़ा कैसे लोमड़े भाई, झील तो सारी जमी पड़ी है?"

लोमड़े ने फिर झूठ बोला — "मेरे पास इनको पकड़ने का एक खास तरीका है।"

भालू बोला — "ये मछलियॉ तो दिखायी भी बहुत अच्छी दे रही हैं लोमड़े भाई और खुशबूदार भी बहुत लग रही हैं। क्या तुम इनमें से थोड़ी सी मुझे भी दोगे?"

लोमड़ा बोला — "नहीं भाई। तुम अपनी मछलियॉ अपने आप पकड़ो।"

भालू बड़ी नम्रता से बोला — "मैं भी ऐसी मछली पकड़ना चाहता हूॅ। क्या तुम मुझको मछली पकड़ने का अपना वह खास तरीका बताओगे जिससे मैं भी इस जमे हुए बरफ में से ऐसी ही मछलियॉ पकड़ सकूॅ?" और ऐसा कह कर उसने अपनी पूॅछ फिर से हिलायी।

लोमड़ा भालू के साथ उस झील पर फिर से जाना नहीं चाहता था क्योंकि उसको डर था कि वह मछियारा कहीं उसको पकड़ न ले जिसकी मछलियॉ उसने चुरायी थीं।

पर उसको भालू का उसकी तरफ देख कर बार बार पूॅछ हिलाना भी अच्छा नहीं लग रहा था सो उसने भालू से एक और झूठ बोलने का निश्चय किया।

लोमड़े ने भालू से कहा — "मछलियॉ पकड़ना बहुत आसान है भालू भाई। मैं तुम्हें बताता हूॅ। पहले तुम बरफ में एक छेद करो फिर तुम उस छेद पर ऐसे बैठ जाओ जिससे तुम्हारी पूॅछ उस छेद में नीचे गिर जाये। पर तुमको अपनी पूॅछ पानी में काफी देर तक लटकानी पड़ेगी।

सो अगर तुम्हारी पूँछ को थोड़ी तकलीफ भी हो तो चिन्ता मत करना क्योंकि उस तकलीफ का मतलब होगा कि मछलियाँ तुम्हारी पूँछ को काट रही हैं। जितनी ज़्यादा देर तक तुम अपनी पूँछ पानी में रखोगे उतनी ही ज़्यादा मछलियाँ तुम पकड़ पाओगे।

जब तुम देखो कि अब तुम अपनी पूँछ हिला भी नहीं पा रहे हो तो समझना कि अब तुम अपनी पूँछ बाहर निकालने के लिये तैयार हो। बस फिर तुम एक दम से उठ कर खड़े हो जाना और जितनी जल्दी से अपनी पूँछ बाहर निकाल सको निकाल लेना।"

उफ़, यह चालाक लोमड़ा भालू से कितना झूठ बोला?

भालू ने उसको बड़ी नरमी से धन्यवाद दिया और एक बार फिर से अपनी लम्बी पूँछ हिलाता हुआ उस जमी हुई झील की तरफ चल दिया।

रास्ते में भालू ने एक मछियारे से बरफ खोदने वाला औजार और एक आरी उधार माँगी और उनसे उसने जमी हुई झील की बरफ में एक छेद किया।

जैसे लोमड़े ने उस मछियारे की बिना इजाज़त के उसकी मछलियाँ चुरा ली थीं भालू ने ऐसा नहीं किया।

जब भालू का छेद तैयार हो गया तो उसने उस मछियारे के औजार वापस किये और उससे इजाज़त ले कर वह उस छेद पर आ कर बैठ गया। उसने अपनी लम्बी पूँछ उस छेद में अन्दर डाल दी।

उतनी कड़ी सरदी में उस ठंडे पानी में अपनी पूँछ डाल कर बैठना उसको बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था पर वैसी ही सुन्दर, ताजा और खुशबूदार मछलियाँ पकड़ने के लिये वह यह भी करने को तैयार था।

वह बेचारा वहाँ तब तक बैठा रहा जब तक पानी ने उसकी पूँछ के चारों तरफ जमना नहीं शुरू किया।

पानी जमने की वजह से अब उसकी पूँछ में दर्द होना शुरू हो गया था तो उसको लोमड़े की बात याद आयी कि "अगर तुम्हारी पूँछ में थोड़ा बहुत दर्द भी हो तो चिन्ता मत करना, यह समझना कि मछलियाँ तुम्हारी पूँछ को काट रही हैं।"

इसलिये वह वहाँ खुशी खुशी बैठा रहा और तब तक बैठा रहा जब तक उसकी पूँछ के चारों तरफ का पानी ठोस तरीके से जम नहीं गया।

जब भालू को लगा कि अब वह अपनी पूँछ बिल्कुल भी नहीं हिला पा रहा है तो उसने सोचा कि लगता है कि अब उसकी पूँछ से बहुत सारी मछलियाँ चिपक गयी हैं इसलिये अब खड़े होने का समय आ गया है। वह खड़ा हो गया और एक झटके से उसने अपनी पूँछ पानी में से बाहर खींच ली।

भालू तो बहुत ताकतवर जानवर होता है सो जैसे ही उसने अपनी पूँछ बाहर खींची वह बाहर तो निकल आयी। पर यह क्या?

उसकी पूँछ तो अभी भी पानी में रह गयी थी। वह इसलिये कि पानी में जमी रहने की वजह से उसकी पूरी पूँछ निकल ही नहीं पायी और झटके से खींचने की वजह से टूट गयी।

जो पूँछ उसकी बाहर थी उसमें कोई मछली नहीं थी और बाकी की पूँछा उसकी पानी के अन्दर ही रह गयी थी। बस अब तो वह एक बहुत ही छोटी सी पूँछ वाला जानवर रह गया था।

भालू को लोमड़े पर बहुत गुस्सा आया कि लोमड़े ने उसके साथ इतने नीच किस्म की यह चालाकी खेली।

उस दिन के बाद से भालू की पूँछ बढ़ी ही नहीं, वह उतनी की उतनी ही है। और तभी से वह जंगल में जब किसी से भी मिलता है तो उससे वह प्रेम का बरताव नहीं करता और हर एक पर गुर्राता ही रहता है।

2 भालू ने अपनी पूँछ कैसे खोयी–2[2]

भालू के पूँछ खोने की एक और लोक कथा। यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं से ली है। वहाँ यह लोक कथा कुछ ऐसे कही जाती है।

बहुत पहले भालू की भी बहुत बड़ी सी पूँछ हुआ करती थी और वह उसकी बहुत ही कीमती चीज़ थी। वह उसको जब तब इधर उधर हिलाता रहता ताकि लोग उसकी उस शानदार पूँछ को देखें।

एक दिन एक लोमड़े ने इसे देखा। और जैसा कि सभी जानते हैं कि लोमड़ा तो बहुत चालाक होता है और उसको दूसरे को बेवकूफ बनाने में बहुत मजा आता है सो उसने इस भालू के साथ भी एक चाल खेलने की सोची।

यह साल का वह समय था जब पाले की आत्मा हैथो[3] सारे देश में फैली हुई थी। उसने सारी झीलों को बरफ से ढक रखा था और सारे पेड़ों पर बरफ की चादर फैलायी हुई थी।

---

[2] How Bear Lost His Tail? – a folktale from Native Americans, Iroquois Tribe, North America. Adapted from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/HowBearLostHisTail-Iroquois.html

[3] Hatho, the Spirit of Frost

लोमड़े ने बरफ में उस जगह एक छेद बनाया जहॉ वह अक्सर घूमने जाया करता था। वहॉ जा कर वह उस छेद के ऊपर बैठ गया और अपनी पूँछ उस छेद में डाल दी। कुछ ही देर में उसकी पूँछ में बहुत सारी मछलियॉ चिपक गयीं और उसने बहुत सारी मछलियॉ पकड़ लीं।

घूमते घूमते भालू भी उधर आ निकला। जब तक भालू उसके पास आया तब तक उसके चारों तरफ बहुत सारी मछलियों का ढेर लग चुका था।

इससे पहले कि भालू लोमड़े से यह पूछता कि तुम यहॉ क्या कर रहे हो लोमड़े ने उस छेद में पड़ी अपनी पूँछ इधर उधर घुमायी और एक बड़ी सी मछली निकाल ली। वह मछली उसने दूसरी मछलियों के साथ रखी और भालू की तरफ देखा।

लोमड़ा बोला — "भालू भाई नमस्ते। आज तुम कैसे हो?"

भालू उसके चारों तरफ लगे मोटी मोटी मछलियों के ढेर की तरफ देखता हुआ बोला — "नमस्ते लोमड़े भाई। मैं तो ठीक हूँ पर तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

लोमड़ा बोला — "मैं तो मछलियॉ पकड़ रहा हूँ क्या तुम भी अपने लिये मछलियॉ पकड़ने की कोशिश करना चाहते हो?"

भालू ने लोमड़े के मछली पकड़ने वाले छेद के ऊपर झुकते हुए कहा — "हॉ हॉ, क्यों नहीं?"

लेकिन लोमड़े ने उसको वहीं रोक दिया और बोला — "अभी रुको भाई। यह जगह अब ठीक नहीं है। जैसा कि तुम देख रहे हो मैंने यहॉ से करीब करीब सारी मछलियॉ पकड़ लीं हैं। अब हमको मछली पकड़ने के लिये कोई नयी जगह ढूँढनी चाहिये जहॉ तुम बहुत सारी मछलियॉ पकड़ सको।"

और यह कह कर लोमड़ा वहॉ से उठा और चल दिया तो भालू भी उसके पीछे पीछे हो लिया।

लोमड़ा वहॉ की जगहों को खूब अच्छी तरह जानता था सो वह भालू को वहॉ ले गया जहॉ वह झील बहुत ही उथली थी और वहॉ जाड़ों की मछलियॉ नहीं पकड़ी जा सकती थीं क्योंकि जाड़ों की मछलियॉ तो हमेशा गहरे पानी में ही मिलती थीं।

भालू ने देखा कि लोमड़े ने वहॉ पहुँच कर बरफ में एक छेद किया और जल्दी ही उसमें से एक मछली पकड़ कर खाने लगा।

फिर वह भालू से बोला — "अब तुम वैसा ही करो जैसा मैं तुमसे कहता हूँ। पहले तो अपने दिमाग से मछली का विचार बिल्कुल ही निकाल दो।

और कोई गाना भी नहीं गाना क्योंकि अगर तुमने कोई गाना गाया तो कोई मछली उसे सुन सकती है। और तुम्हारा गाना सुनते ही वह यहॉ से चली जायेगी।

फिर अपनी पीठ इस छेद की तरफ कर लो और अपनी पूँछ इस छेद के अन्दर डाल दो। जल्दी ही कोई मछली आ कर तुम्हारी पूँछ पकड़ लेगी और फिर तुम उसको ऊपर खींच लेना।"

भालू ने पूछा — "पर जब मेरी पीठ इस छेद की तरफ है तब मुझे कैसे पता चलेगा कि किसी मछली ने मेरी पूँछ पकड़ ली है?"

लोमड़ा बोला — "मैं यहाँ छिप जाता हूँ। यहाँ मुझे कोई मछली नहीं देख सकती। जब कोई मछली तुम्हारी पूँछ पकड़ेगी तो मैं ज़ोर से चिल्ला दूँगा तब तुम मछली को बाहर निकालने के लिये अपनी पूँछ तुरन्त ही खींच लेना। पर तुमको थोड़ा धीरज रखना पड़ेगा। जब तक मैं न कहूँ तुम बिल्कुल हिलना नहीं।"

भालू ने हाँ में सिर हिलाया और बोला — "ठीक है मैं वैसा ही करूँगा जैसा तुमने कहा है।" सो वह उस छेद के पास छेद की तरफ पीठ करके बैठ गया।

उसने अपनी सुन्दर लम्बी घनी पूँछ उस छेद में ठंडे पानी में डाल दी और अब वह मछली का इन्तजार करने लगा।

लोमड़े ने थोड़ी देर तो भालू को देखा कि वह वैसा ही कर रहा है या नहीं जैसा कि उसने उसको बताया था फिर वह धीरे से उठ कर अपने घर चला गया और जा कर सो गया।

जब वह सुबह उठा तो उसको भालू की याद आयी — "पता नहीं वह भालू बेचारा अभी भी वहीं बैठा है या नहीं। मुझे जा कर

उसको देखना चाहिये।" सो वह उस बरफ से ढकी झील की तरफ चल दिया।

वहॉ पहुँच कर तुमको क्या लगता है बच्चों कि उसने क्या देखा होगा? उसने देखा कि उस झील के ऊपर एक छोटी सी बरफ की पहाड़ी बनी हुई है।

रात को बहुत बरफ पड़ी थी और उसने भालू को ढक लिया था। उधर भालू भी लोमड़े की आवाज का इन्तज़ार करते करते कि "अब मछली ने तुम्हारी पूँछ पकड़ ली है अपनी पूँछ खींच लो" सो गया था।

भालू इतने ज़ोर से खर्राटे भर रहा था कि उसकी आवाज से झील की सारी बरफ हिल रही थी। लोमड़े को यह सब देखने में इतना मजा आया कि वह तो हॅसते हॅसते लोट पोट ही हो गया।

जब लोमड़ा काफी हॅस चुका तो उसको लगा कि अब समय आ गया है जब मुझे इस बेचारे भालू को जगाना चाहिये। वह धीरे से भालू के कान के पास पहुँचा और एक गहरी सॉस ली और चिल्लाया — "भालू अब तुम अपनी पूँछ खींचो।"

भालू चौंक कर जाग गया और उसने जितनी ज़ोर से वह खींच सकता था उतना ज़ोर लगा कर अपनी पूँछ खींच ली। पर रात भर में तो ठंड में उसकी पूँछ उस झील के पानी में जम गयी थी सो वह उसके खींचते ही टूट गयी।

भालू ने पीछे की तरफ देखा कि उसकी पूँछ में कोई मछली है या नहीं पर यह देख कर तो वह रो पड़ा कि उसकी तो पूँछ ही चली गयी थी।

वह रोते रोते चिल्लाया — "ओ लोमड़े के बच्चे, मैं तुझे इसके लिये देख लूँगा।" पर लोमड़ा तो भालू के झपटने से पहले ही वहाँ से कूद कर भाग चुका था।

इसी लिये आज तक भालू की छोटी ही पूँछ है और वे लोमड़ों को भी पसन्द नहीं करते।

अगर कभी तुम किसी भालू को कराहते हुए सुनो तो शायद वह इसी लिये कराह रहा होगा कि उसको उसके साथ बहुत दिन पहले की गयी लोमड़े की वह चाल याद आ गयी जिसमें लोमड़े ने उसकी पूँछ तोड़ दी थी।

3 भालू ने मॉस खाना कैसे सीखा[4]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। बहुत पहले भालू मॉस खाना नहीं जानते थे वे केवल फल और सब्जियों पर ही गुजारा करते थे।

सो उन्होंने मॉस खाना कैसे सीखा। चलो पढ़ते हैं इसकी भी वजह। यह सब फ्रांस में शुरू हुआ।

यह उन दिनों की बात है जब भालू मॉस नहीं खाते थे। वे भी सब्जियों और फल पर ही गुजारा करते थे।

एक बार की बात है कि जाड़े का मौसम था। ठंड बड़े ज़ोरों पर थी। जानवरों और पक्षियों को अपने खाना ढूँढने के लिये मीलों लम्बा सफर करना पड़ता था। कुछ पक्षी पहाड़ों की ठंड से बचने के लिये पहाड़ों की तलहटी में चले गये थे।

ऐसी ही एक शाम को एक भालू, उसकी पत्नी और उसका बच्चा तीनों ही ठंड से सिकुड़े अपनी गुफा में बैठे थे। लगता था कि वे सब बहुत भूखे हैं और उन्होंने कई दिनों से पेट भर खाना नहीं खाया है।

[4] How the Bear Learnt to Eat Meat? – a folktale from France, Europe

पत्नी ने कहा — "ऐसे कब तक चलेगा? कितनी ठंड पड़ रही है और खाना भी कहीं मिल नहीं रहा। ऐसे तो हम लोग मर जायेंगे।"

पति ने एक लम्बी सॉस भर कर कहा — "क्या करें, तुम ही बताओ। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।"

पत्नी ने अपने भूखे बच्चे की ओर देखा और बोली — "तुम पहाड़ की तलहटी के पास वाले गॉव में क्यों नहीं चले जाते? लेकिन जरा होशियारी से जाना कहीं ऐसा न हो कि तुमको देख कर वे लोग डर जायें।

अगर तुम वहॉ अपने पिछले पैरों पर खड़े हो कर नाचोगे तो वे शायद लोग तुमको देख कर हॅसें और खुश हो कर शायद कुछ प्याज□बन्द गोभी या कुछ आलू दे दें।"

पति ने जवाब दिया — "यह तो साफ ही है कि अगर कोई हमारी सहायता नहीं करेगा तो हम लोग मर जायेंगे इसलिये इस तरीके को आजमाने में भी क्या हर्ज है।

हालॉकि मैंने यह सब पहले कभी किया नहीं है पर कल मैं इसे पहली बार करके देखता हूॅ। कल मैं अॅधेरे के समय शाम के बाद जाऊॅगा और आदमी की गन्ध सूॅघूंगा।"

अगले दिन शाम को अॅधेरा होने के बाद पति भालू पहाड़ों से नीचे उतरा और गॉव के रास्ते पर चल दिया। घने कोहरे में से तारों की झिलमिल रोशनी झॉक रही थी। गॉव के पास पहुॅच कर उसको

धुँए की गन्ध आयी। पहली बार पति भालू ने धुँए की गन्ध महसूस की।

आगे जाने पर उसने देखा कि जहाँ धुँआ था वहाँ आग थी और जहाँ आग थी वहाँ गरमी। उस गरमी से उसके शरीर में कुछ जान आयी।

वह और आगे बढ़ा तो रोटी की खुशबू आयी क्योंकि वहीं पास में एक बेकरी की दूकान थी जहाँ गाँव भर के लिये डबल रोटी बनती थी।

रात हो चुकी थी। करीब करीब सारा गाँव सोया पड़ा था। पर ऐसी रात में एक आदमी अभी भी रोटियाँ बना रहा था।

पति भालू उधर ही जा पहुँचा और खुले दरवाजे के सामने खड़े हो कर अपनी पिछली टाँगों पर नाचने लगा, जैसा कि उसकी पत्नी ने उससे कहा था।

आदमी की निगाह उधर गयी तो वह चौंक गया। उसने देखा कि एक भालू बाहर खड़ा अपने पिछले पैरों पर खड़ा नाच रहा है। उसकी तो नसों में जैसे खून ही जम गया। वह डर के मारे काँपने लगा।

कुछ पल तो वह उसे नाचते देखता रहा तो उसे लगा कि भालू की नीयत उसको तंग करने की नहीं थी बल्कि उसको उसकी ताजा डबल रोटी चाहिये थी। यह देख कर उसकी जान में जान आयी।

उसने भालू से कहा — "तुम वहॉ बाहर खड़े खड़े क्यों नाच रहे हो, आओ मेरी कुछ सहायता ही कर दो। डबल रोटी सेकने की ये तश्तरियॉ मुझे उठा दो और मैं तुम्हें कुछ डबल रोटियॉ दे दूँगा।"

भालू से जैसा कहा गया उसने वैसा ही किया। उसने वे तश्तरियॉ उठायीं, उनको ओवन में रखा, दूकान साफ की, डबल रोटियॉ ओवन से निकालीं।

सारी रात भालू उस आदमी के वफादार नौकर की तरह उसकी दूकान में काम करता रहा। सुबह को चार डबल रोटियॉ मजदूरी के रूप में ले कर वह अपनी गुफा में पहुँचा। ताजा डबल रोटी देख कर सारा भालू परिवार बहुत खुश हुआ और सबने ताजा डबल रोटी की दावत बॉट कर खायी।

इस घटना के बाद अब वह भालू रोज रात को गॉव जाने लगा और डबल रोटी बनाने में उस आदमी की सहायता करने लगा। उस इलाके में वह आदमी पॉच गॉवों के लिये अकेले ही डबल रोटी बनाता था।

धीरे धीरे वह आदमी अपने शान्ति प्रिय और मेहनती साथी को बहुत पसन्द करने लगा था। और मजदूरी भी कुछ ज़्यादा नहीं, बस केवल चार डबल रोटी। लेकिन फिर भी वह एक भालू को अपनी दूकान में नौकर रख कर खुश नहीं था।

एक रात उस आदमी की पत्नी इस अजीब काम को देखने के लिये रात को उठी। उसको देख कर सचमुच ही बड़ा आश्चर्य हुआ

कि किस प्रकार एक भालू सधे हुए हाथों से दूकान का सारा काम कर रहा था।

उसने अपने पति से कहा — "अगर इस भालू की शादी हो गयी हो तो इससे बात करो। इसकी पत्नी घर के कामों में मेरी सहायता कर दिया करेगी।"

दूकान के मालिक ने भालू से इस बारे में बात की। पति भालू ने जब यह सुना तो उसने अपनी पत्नी को जा कर बताया। पत्नी यह सुन कर बहुत खुश हुई और अगले दिन से वह भी गॉव जाने लगी।

दोनों ही भालू मेहनती थे, साथ ही उनकी मजदूरी भी बहुत कम थी सो आदमी और उसकी पत्नी दोनों ने ही यह तय किया कि वह भालू परिवार वहीं गॉव में ही रहे और उनकी सहायता करे।

उन्होंने उनको रहने के लिये वहीं पास में ही एक घर दे दिया गया जिसमें काफी घास फूस थी।

क्योंकि उन भालुओं को अब ताजा पकी हुई डबल रोटी खाने को मिलती थी वे बिल्कुल ही भूल गये थे कि वे क्या हैं, उनका खाना क्या है और उन्हें कहॉ रहना चाहिये।

अब हुआ यह कि उस आदमी के एक लड़का था जो गॉव के दूसरे सिरे पर स्कूल जाया करता था।

उस लड़के और भालू बच्चे की इतनी अधिक दोस्ती हो गयी कि उस आदमी का लड़का उस भालू बच्चे को एक पल के लिये भी

अलग नहीं करना चाहता था। सो वह लड़का उस भालू बच्चे को भी अपने साथ स्कूल ले जाने लगा।

उस लड़के के टीचर भी उस भालू बच्चे को देख कर बहुत खुश थे क्योंकि वह भालू बच्चा सोने की तरह सुन्दर और चूहे की तरह शान्त था।

दिन बीतते चले गये। भालू बच्चा बड़ा होता गया। एक दिन ऐसा भी आया जब वह बहुत बड़ा हो गया और इतना बड़ा हो गया कि स्कूल की सारी कुर्सियॉ और मेजें उसके लिये छोटी पड़ गयीं।

मास्टर जी ने पति भालू और पत्नी भालू को बुलाया और उनको सलाह दी कि अब उस बच्चा भालू को किसी व्यापार में लगा दिया जाये लेकिन पति भालू और पत्नी भालू इस बारे में कुछ भी नहीं जानते थे सो इस बारे में वे कुछ भी नहीं सोच सके।

तब मास्टर जी ने उसको सलाह दी कि लाटरी निकाली जाये और जो काम भी उस लाटरी में निकले वही काम बच्चा भालू कर लेगा।

लाटरी निकालने के लिये कुछ परचियॉ बनायीं गयीं। उन पर कुछ काम लिखे गये जैसे दरजीगीरी, रंगसाज़, चिमनी साफ करने वाला, लकड़ी काटने वाला, आदि आदि और कसाई।

भाग्य की बात, भालू बच्चा ने जब अपनी परची खोली तो उस के ऊपर कसाई का काम लिखा था। पति भालू और पत्नी भालू

दोनों ही उसको साथ ले कर बाजार गये और वहॉ जा कर एक कसाई की दूकान पर उसको काम पर लगा दिया।

जब भालू बच्चा काम पर जाने के लिये विदा हुआ तो तीनों ही भालुओं की ऑखें ऑसुओं से भरी थीं। पति भालू और पत्नी भालू जब बच्चा भालू को काम पर भेज कर घर पहुॅचे तो पति भालू इतना दुखी था कि बहुत देर तक तो उससे कोई काम ही नहीं हुआ।

पत्नी भालू ने पूछा — "प्रिये, क्या बात है बहुत उदास हो?"

पति भालू बोला — "हॉ प्रिये, मैं नहीं जानता कि कसाई क्या होता है और वह क्या करता है पर एक बात मुझे ठीक लगती है कि उस कसाई की दूकान में से खुशबू बहुत ही अच्छी आ रही थी इस लिये मुझे लगता है कि हमारा बच्चा वहॉ ठीक से रहेगा।"

ऐसा इसलिये हुआ कि सारा मामला दूकान के बाहर इतनी जल्दी निपट गया और तय हो गया कि पति भालू को दूकान को अन्दर से देखने का मौका ही नहीं मिला। लेकिन पति भालू दूकान की उस गन्ध को नहीं भूल सका।

एक सप्ताह बाद जब भालू बच्चा घर आया तो पति भालू और बच्चा भालू में ये बातें हुईं —

पति भालू — "मेरे बच्चे, तुम उस कसाई के लिये क्या काम करते हो? मेरा मतलब है कि वह तुमसे किस तरीके का काम कराता है?"

बच्चा भालू — "मैं कसाई को भेड़ मारने में मदद करता हूँ, पिता जी। भेड़ आदमी लोग खाते हैं।"

पति भालू — "उँह, तो क्या आदमी लोग ऊन खाते हैं?"

बच्चा भालू — "नहीं पिता जी, ऊन के नीचे खाल होती है।"

पति भालू — "तो क्या वे खाल खाते हैं?"

बच्चा भालू — "नहीं पिता जी, खाल के नीचे हड्डियाँ होती हैं।"

पति भालू — "तो क्या वे हड्डियाँ खाते हैं?"

बच्चा भालू — "नहीं पिता जी, ऊन के नीचे खाल, और खाल और हड्डियों के बीच में माँस होता है। वही चीज़ आदमी लोग खाते हैं।"

पति भालू — "अरे, मुझे नहीं मालूम था कि भेड़ें अपने माँस को इतना छिपा कर रखती हैं। मैंने तो कभी यह शब्द भी नहीं सुना था लेकिन तुमसे यह सब सुन कर और जान कर मुझे बहुत अच्छा लगा।

मेरे प्यारे बेटे, जब तुम अगली बार आओ तो एक टुकड़ा भेड़ के माँस का हमारे लिये भी लाना, हम भी उसे खा कर देखेंगे।

इसके आगे की कहानी बिल्कुल साफ है। जब बच्चा भालू अगली बार घर आया तो वह मटन चाप के कुछ टुकड़े अपने माता पिता के लिये भी ले कर आया।

जल्दी ही पति भालू और पत्नी भालू को डबल रोटी के बजाय मटन चाप ज़्यादा अच्छे लगने लगे। अब वह डबल रोटी को पाने के लिये इतनी अधिक मेहनत करने को तैयार नहीं थे।

इस तरह अचानक ही वे जंगली हो गये थे। आदमी ने तुरन्त ताड़ लिया कि अब इनको यहॉ रखना ठीक नहीं था। इसलिये उसने उनको तुरन्त ही वहॉ से जंगल में भगा दिया।

उनका बच्चा भी उनके साथ ही चला गया। अब वे लोग बजाय फल, सब्जी और शहद के मटन खाने लगे थे।

कितना बेवकूफ था वह मास्टर जिसने एक परची पर कसाई लिखा। अगर मैं होती तो लिखती — कैमिस्ट, फल बेचने वाला, मजदूर आदि आदि। और फिर यह न हुआ होता जो अब हुआ, यानी कि भालू शाकाहारी जानवर ही रहता।

4 भालू जाड़े भर क्यों सोता है[5]

बच्चों क्या तुम लोगों को मालूम है कि भालू जाड़े भर सोता है? नहीं। तो जानो कि वह जाड़ों भर सोता है। पर क्यों सोता है यह तो तुम लोगों को बिल्कुल ही नहीं मालूम होगा। तो लो पढ़ो वह जाड़े भर क्यों सोता है।

बालों वाली मादा खरगोश एक बहुत ही प्रेमी और बड़े दिल वाली जानवर थी। वह सब जानवरों की सहायता करने में लगी रहती।

जब छोटे मेंढक को कोई और जगह खेलने के लिये नहीं मिलती तो वह मादा खरगोश अपनी जमीन में एक गड्ढा खोदती और उसको पानी से भर देती। और इस तरह से वह उस गड्ढे को मेंढक के खेलने की जगह बना देती।

मादा खरगोश ने गिलहरी को अपना घोंसला बनाते हुए देखा तो वह बहुत सारी पत्तियॉ ले आयी और उसके घोंसले के पास ला कर रख दीं ताकि वह गरम रह सके।

[5] Why Bear Sleeps All Winter? – a story from Native Americans, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=221
Adapted, retold and written by Mike Lockett.

वह जब मोल भाई[6] को अपना घर बनाने के लिये पत्थर हटाते देखती तो वह पत्थर हटाने में उसकी सहायता करती।

सारे जानवर उसका धन्यवाद करते और जब भी उसको किसी सहायता की जरूरत होती तो वे उसकी सहायता के लिये तैयार रहते।

वह बड़े कत्थई भालू की भी सहायता करती। भालू गरमी भर बैरीज़[7] खा कर बिता देता जो झाड़ियों पर उगती थीं।

वह शहद की मक्खी के छत्ते से शहद भी खाता था पर अब भालू भूखा था तो उस मादा खरगोश ने भालू को अपनी ओक के पेड़ की गिरियॉ[8] जो उसने अपने शाम के खाने के लिये रखी थीं दे दीं।

उसने उसको गाजर और बन्द गोभी भी दी जो उसने अपने खाने के लिये पास के खेत से तोड़ कर ला कर रखी थी। पर बड़े कत्थई भालू ने तो उसको

[6] Mole is a big rat type animal who lives in burrows. See its picture above.

[7] Berry – Berries are a kind of small fruit grown on bushes, such as blueberry, raspberry etc. See their picture above.

[8] Acorn – the nuts of Oak tree fruits.

धन्यवाद भी नहीं दिया। बल्कि उसने तो यह भी कहा कि उसको और चाहिये।

वह बड़ा कत्थई भालू हर जगह उस मादा खरगोश के पीछे पीछे घूमता रहता। जब भी कभी वह मादा खरगोश जाड़ों के लिये अपना खाना इकट्ठा करती वह बड़ा कत्थई भालू कहता "और"। और फिर वह उसका सारा खाना खा जाता।

इस तरह वह बड़ा भालू उसके लिये एक बड़ी समस्या बन गया था।

जब उस मादा खरगोश ने लकड़ी के एक खोखले लट्ठे में जाड़ों के लिये अपना खाना भरा तो वह फिर बोला "और"। और फिर वह खाने के लिये उस लट्ठे पर चढ़ गया और मादा खरगोश का खाना खा कर सो गया।

सो मादा खरगोश छोटे मेंढक, गिलहरी और मोल भाई के पास गयी और बोली — "मैं क्या करूँ? मैं इतनी छोटी सी हूँ और बड़ा कत्थई भालू बहुत बड़ा है।

जो खाना मैं अपने लिये जाड़ों के लिये इकट्ठा करती हूँ वह वह सारा खाना खा जाता है। इस समय वह मेरे घर में मेरे खोखले पेड़ में रह रहा है। उसने मेरा घर भी ले लिया है।"

यह सुन कर छोटे मेंढक, गिलहरी और मोल भाई तीनों ने मादा खरगोश की सहायता करने का विचार किया।

गिलहरी ने उस खोखले पेड़ के दोनों तरफ सूखी पत्तियॉ लगा कर उसको बन्द कर दिया। छोटे मेंढक ने कीचड़ ला कर उन पत्तियों के ऊपर लपेट दी। और मोल ने उस कीचड़ के ऊपर छोटे छोटे पत्थर ला कर लगा दिये।

फिर वे सब बोले — "अब ओ मादा खरगोश तुम अपने पैरों से दबा दबा कर इन पत्थरों को इस कीचड़ में कस कर घुसा दो।" मादा खरगोश ने फिर यही किया।

जब वे लोग यह सब कर रहे थे वह बड़ा कत्थई भालू उस खोखले पेड़ के अन्दर सोता ही रहा।

जब भालू की ऑख खुली तो उसको चारों तरफ ऍधेरा ही ऍधेरा दिखायी दिया क्योंकि बाहर से कोई रोशनी न आने की वजह से उस खोखले लट्ठे में ऍधेरा ही ऍधेरा था तो उसने सोचा कि शायद अभी रात है सो वह फिर से सो गया। वह सोता ही रहा, सोता ही रहा, सोता ही रहा।

मादा खरगोश ने फिर अपने लिये एक नया घर ढूँढ लिया और उसको खाने से भर लिया। फिर जाड़ा आ गया। मादा खरगोश अपने घर में गरम भी रही और अब उसके पास खाने के लिये भी बहुत कुछ था। उसके दोस्तों को बहुत बहुत धन्यवाद।

जाड़ा बीत गया। वसन्त आ रहा था। लट्ठे के बाहर चिड़ियों के चहचहाने की आवाज सुन कर आखिर भालू की ऑख खुली।

तब उसने वे पत्तियॉ सूखी कीचड़ और पत्थर के टुकड़े हटाये और बाहर आया।

वसन्त आ चुका था। वह बोला — "अरे मैं तो सारे जाड़े यहॉ सोता ही रहा। यह तो बड़ा अच्छा रहा। इस तरह से मुझे जाड़े में खाने की परेशानी बी नहीं रहेगी। अब आगे से मैं यही करूॅगा।"

अब तो यह बहुत पुरानी बात हो गयी पर मादा खरगोश अभी भी सबकी सहायता करती है, बड़े कत्थई भालू की भी।

पर उसको अब यह भी मालूम है कि उसके पास जाड़े भर के लिये खूब खाना रहेगा क्योंकि अब उसको बड़े कत्थई भालू से अपना खाना नहीं बॉटना क्योंकि भालू अब सारे जाड़े सोते हैं और मादा खरगोश से खाना नहीं मॉगते।।

5 आदमी आग का मालिक कैसे बना[9]

या भालू ने आग कैसे खोयी। यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका में रहने वाली आदिवासियों में कही सुनी जाती है।

बहुत पुराने समय में भालू एक बहुत ही ताकतवर जानवर था। वह बहुत होशियार था। वह बहुत मजबूत था। उस समय केवल वही आग का मालिक था क्योंकि केवल वही जानता था कि आग कैसे जलायी जाती है। वह उसको हमेशा जलाये रखता था ताकि वह बुझे नहीं।

आग से उसकी गुफा सूखी और चमकीली रहती थी। इसके अलावा वह दूसरे जानवरों को उससे दूर भी रखती थी क्योंकि वे सब आग से डरते थे।

एक बार भालू अपनी गुफा में ऐसे ही बैठा हुआ था कि उसको कहीं से किसी चीज़ की खुशबू आयी। उसने हवा में कुछ सूँघा। पहले उसने एक बार सूँघा। फिर उसने दोबारा सूँघा। फिर उसने तीसरी बार सूँघा फिर वह अपने गुफा के दरवाजे पर गया।

वहाँ जा कर उसको रसभरी की खुशबू आयी। भालू को रसभरी बहुत अच्छी लगती थीं सो वह अपनी गुफा छोड़ कर रसभरी की तलाश में चल दिया।

---

[9] How Man Became Master of Fire – a folktale from Native Americans, North America. Adapted rom the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=168

उसकी आग उसकी गुफा में पत्थरों के एक गोले के अन्दर जल रही थी। वह वहॉ जलती रही।

अब भालू वहॉ से चला तो गया पर वह अपनी आग में और लकड़ियॉ डालना भूल गया ताकि वह बुझ न जाये।

वह उधर ही चल दिया जिधर से उसे खुशबू आ रही थी। जल्दी ही वह रसभरियों के पास पहुॅच गया और वहॉ जा कर रसभरियॉ खाने लगा।

रसभरियॉ इतनी अच्छी थीं कि बस वह तो उनको खाने में लग गया और आग के बारे में बिल्कुल ही भूल गया।

आग चिल्लायी — "मुझे खाना चाहिये। मुझे भूख लगी है मुझे खाना खिलाओ। ओ भालू तुम कहॉ हो तुम आओ और मुझे खाना दो वरना मैं मर जाऊॅगी।"

आग को खाना चाहिये था – लकड़ी या भूसा या डंडियॉ या कुछ और जिससे वह ज़िन्दा रह सके।

पर भालू तो वहॉ से बहुत दूर था वह आग की पुकार नहीं सुन सका। वह तो जंगल में रसभरियॉ खा रहा था।

आग ने एक बार फिर पुकारा — "आओ भालू मुझे खाना दो मुझे भूख लगी है।"

इस समय आग में बस बहुत कम कोयले बचे थे बाकी सब कुछ वह खा कर खत्म कर चुकी थी और अब मरने वाली हो रही थी।

इत्तफाक से उस समय एक आदमी उधर से जा रहा था तो उसने आग की यह पुकार सुनी "मुझे खाना दो वरना मैं मर जाऊँगी।" तो उसने एक मुट्ठी सूखी घास उठायी और मरती हुई आग में डाल दी। साथ में उसने उसके पास बैठ कर उसको थोड़ी सी हवा भी दी। उसने देखा कि किस तरह से उसकी उस हल्की सी हवा से वह आग और तेज़ जलने लगी।

उधर वह सूखी घास भी जल कर खत्म होने लगी थी सो उसने कुछ सूखे पाइन कोन और सूखी डंडियॉ उठायीं और आग में डाल दीं। उनके जल जाने के बाद उसने फिर और बड़ी लकड़ियॉ उठायीं और उनको आग में डाल दीं।

आग को खाना मिला तो आग में जान आ गयी। वह और मजबूत हो गयी। वह और ज़ोर से जलने लगी। आदमी को वहॉ बैठे बैठे देर हो गयी थी सो उसको भी भूख लगी थी। आग ने कहा कि वह उस पर अपना खाना पका सकता था।

अब आग और आदमी दोस्त हो गये थे सो वह आदमी के साथ उसके घर जाने के लिये तैयार हो गयी तो आदमी कोई चीज़ ऐसी ढूँढने गया जिसमें वह आग को अपने घर ले जा सकता।

अब शाम हो गयी थी। भालू का पेट भी बहुत भर गया था और भालू को जंगल में ठंड भी लगने लगी थी सो वह अपनी गुफा में लौटा तो उसने देखा कि उसकी गुफा में तो अँधेरा है।

भालू ने अपनी आग की तरफ देखा तो आग ने उसको गरम करने से मना कर दिया। भालू ने एक बार और आग के पास आने की कोशिश की तो उसने भालू की मूँछें जला दीं।

इससे भालू को बहुत दर्द हुआ और वह जंगल भाग गया और उसने फिर आग के पास आने की कोशिश भी नहीं की।

उधर आदमी भी आग घर ले जाने के लिये जल्दी ही एक मिट्टी का बरतन ले कर वहाँ वापस आ गया। वह उसे उस बरतन में रख कर अपने घर ले गया। वहाँ उसने आग जलानी सीखी, आग को जलाये रखना सीखा और उसको अपनी रोज की ज़िन्दगी में इस्तेमाल करना सीखा।

उसके बाद से फिर आग हमेशा के लिये आदमी की हो गयी।

6 एक लड़का जो भालुओं के साथ रहा[10]

भालुओं की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में रहने वाले आदिवासियों की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक लड़का था जिसके माता पिता मर गये थे इसलिये वह दुनियॉ में अकेला ही था। उसकी देखभाल करने वाला केवल उसका एक मामा था पर वह मामा भी उसके लिये बहुत बेरहम था।

उसका मामा हमेशा ही यह सोचता था कि वह लड़का उसके ऊपर एक बोझ था सो उसको वह खाने के लिये बस अपने खाने की बचे खुचे टुकड़े दे दिया करता था।

पहनने के लिये वह उसको फटे पुराने कपड़े और टूटे हुए जूते देता था। रात को वह आग से दूर मामा के घर के बाहर सोता था।

पर उस लड़के को कोई गम नहीं था। उसको अपने मामा से कोई शिकायत भी नहीं थी क्योंकि उसके माता पिता ने उसको हमेशा बड़ों का आदर करना सिखाया था।

एक दिन उसके मामा ने उससे पीछा छुड़ाने की सोची सो उसने उस लड़के को बुलाया और उससे कहा — "चलो शिकार करने चलते हैं।"

[10] A Boy Who Lived With Bears – a folktale from Native Americans, from Iroquois Tribe, America. Adapted from the Web Site :
http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/TheBoyWhoLivedWithBears-Iroquois.html

लड़का तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया क्योंकि उसका मामा पहले कभी उसको शिकार पर नहीं ले गया था। वह अपने मामा के पीछे पीछे चल दिया। पहले उसके मामा ने एक खरगोश मारा और उसे उस लड़के को दे दिया।

लड़का उसको ले कर घर जाने को मुड़ा पर उसके मामा ने उसको घर जाने के लिये मना कर दिया और कहा कि अभी वह घर न जाये वह अभी कुछ और शिकार करेगा। वे और आगे बढ़े तो उसके मामा ने एक मोटा सा मुर्गा मारा।

यह देख कर वह लड़का बहुत खुश था कि आज उसका मामा इतना सारा मॉस ले कर घर जा रहा था तो आज रात को उसको भी खूब पेट भर कर अच्छा खाना मिलेगा।

ये शिकार ले कर वह लड़का फिर घर जाने के लिये मुड़ा तो उसके मामा ने फिर उसको जाने से रोक लिया कि अभी घर नहीं जायेंगे बल्कि अभी और शिकार करना है।

और आगे जाने पर वे लोग जंगल के एक ऐसे हिस्से में पहुँच गये जो उस लड़के ने कभी देखा नहीं था। वहॉ एक बहुत बड़ी पहाड़ी थी और उसमें एक गुफा का दरवाजा था जो उस पहाड़ी में जाता था।

गुफा का दरवाजा इतना छोटा था कि उसमें से केवल एक छोटा आदमी ही घुस सकता था। मामा लड़के को वह गुफा दिखा कर बोला — "यहॉ पर बहुत सारे जानवर छिपे रहते हैं। तुम इसके

अन्दर जाओ और उनको दौड़ा कर बाहर निकाल लाओ ताकि मैं उनको अपने तीरों से मार सकूँ।"

गुफा अँधेरी थी और ठंडी थी पर लड़के को याद था जो उसके माता पिता ने उसको सिखाया था सो वह उस गुफा में घुस गया। गुफा में पत्तियाँ और पत्थर तो पड़े हुए थे पर उसको उसमें जानवर कहीं दिखायी नहीं दिये।

वह उस गुफा के आखीर तक चला गया और फिर वहाँ से बाहर की तरफ लौटा। उसको बहुत शरम आ रही थी कि वह अपने मामा की इच्छा पूरी नहीं कर सका।

जब वह बाहर आ रहा था तो उसने देखा कि उसका मामा उस गुफा के मुँह को एक बड़े से पत्थर से बन्द कर रहा था और कुछ ही पल में वहाँ चारों तरफ अँधेरा छा गया।

उस लड़के ने उस पत्थर को वहाँ से हटाने की बहुत कोशिश की परन्तु वह उसे नहीं हटा सका। वह उस गुफा में बन्द हो गया था। पहले तो वह बहुत डरा पर फिर उसको अपने माता पिता की बात याद आ गयी।

उसके माता पिता ने कहा था कि जो लोग दिल से अच्छे होते हैं उनकी इच्छा की ताकत भी बहुत मजबूत होती है। अगर तुम अच्छा करते हो और उस अच्छे में विश्वास करते हो तो तुमको भी अच्छी ही चीज़ें मिलेंगी।

यह सोच कर वह लड़का खुश हो गया और एक गीत गाने लगा। उसका यह गीत उसके अपने बारे में था कि उसके माता पिता नहीं थे और उसको दोस्तों की जरूरत थी।

जैसे जैसे वह अपना गीत गाता जा रहा था उसकी आवाज तेज़ होती जा रही थी। गाते गाते वह बिल्कुल ही भूल गया कि वह एक गुफा में बन्द है।

कुछ देर बाद ही उसने बाहर के पत्थर पर कुछ खुरचने की आवाज सुनी तो उसने अपना गाना बन्द कर दिया। उसने सोचा कि शायद उसका मामा उसको गुफा से बाहर निकालने के लिये आ गया है पर वहॉ कोई एक आवाज नहीं थी बल्कि कई आवाजें थीं।

उसने कई आवाजों में से सबसे पहले जो आवाज सुनी उससे वह पहचान गया कि वह गलत था। वह ऊॅची आवाज उसके मामा की नहीं थी।

उस ऊॅची आवाज ने कहा — "हमको इस लड़के की सहायता जरूर करनी चाहिये।"

इसके जवाब में एक गहरी सी आवाज ने कहा — "हॉ हॉ हमें इसकी सहायता जरूर करनी चाहिये।" लड़के को लगा कि उसकी आवाज प्यार से भरी थी।

उसी आवाज ने फिर कहा — "यह लड़का यहॉ अकेला है और इसको हमारी सहायता की जरूरत है।"

"हॉ इसमें कोई शक नहीं है कि हमको इसकी सहायता करनी चाहिये।"

एक और आवाज़ बोली — "हममें से किसी एक को इसको गोद ले लेना[11] चाहिये।"

और उसके बाद तो फिर कई आवाजों ने कई भाषाओं में बोल कर उस आवाज की हॉ में हॉ मिलायी।

सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि वे सब आवाजें उसके लिये अजीब थीं और भाषा भी पर भाषा अजीब होने के बावजूद वह लड़का उनकी सब बातें समझ रहा था।

कुछ ही देर में गुफा के मुँह पर से वह पत्थर हटा और रोशनी गुफा के अन्दर आयी। बहुत देर तक गुफा में अँधेरे मे रहने की वजह से उस रोशनी से एक बार को तो उस लड़के की ऑखें चौंधिया गयीं।

लड़का धीरे धीरे गुफा से बाहर निकला। वह गुफा की ठंड में ठंडा और जमा हुआ सा हो रहा था। उसने जब अपने चारों तरफ नजर डाली तो उसने देखा कि वह तो बहुत सारे जानवरों से घिरा खड़ा है।

तभी एक छोटी सी आवाज़ उसके पैरों के पास से बोली — "अब जब हम लोगों ने तुमको इस गुफा से निकाल लिया है तो अब तुम हममें से एक को अपना माता पिता चुन लो।"

[11] Translated for the word "Adopting".

लडके ने यह सुन कर नीचे देखा तो उसने देखा कि उसके पैरों के पास एक मोल[12] खड़ा था।

पास में एक पेड़ के पास खड़े हिरन[13] ने कहा — "हॉ तुमको हममें से एक को तो चुनना ही पड़ेगा।"

लड़का बोला — "तुम सबको बहुत बहुत धन्यवाद। तुम तो सब ही मेरे ऊपर बहुत दयालु हो तो मैं किसी एक को अपना माता पिता कैसे चुनूँ?"

मोल बोला — "पहले हम इसको यह तो बता दें कि हम कैसे हैं और हम किस तरीके से रहते हैं तभी यह लड़का निश्चय कर सकता है कि यह हममें से किसको अपना माता पिता चुने।"

सब जानवर इस बात पर राजी हो गये सो वे एक एक करके लड़के के पास आने लगे।

मोल बोला — "पहले मैं शुरू करता हूँ। मैं जमीन के नीचे रहता हूँ। जमीन के नीचे मैं सुरंगें खोद लेता हूँ। नीचे मेरी सुरंगों में बहुत अँधेरा और गरम रहता है और हमें वहाँ बहुत सारे कीड़े आदि भी खाने को मिल जाते हैं।"

---

[12] Moles are small cylindrical mammals. They have velvety fur; tiny or invisible ears and eyes, reduced hind limbs; and short, powerful forelimbs with large paws positioned for digging. See its picture above

[13] Translated for the word "Moose" which is like a stag.

लड़का बोला — "यह तो बहुत अच्छा है पर मुझे डर है कि मैं सुरंगों में जाने के लिये बहुत बड़ा हूँ।"

फिर बीवर[14] आया और बोला — "तब तुम मेरे साथ आओ और मेरे साथ रहो। मैं एक तालाब के बीच में रहता हूँ। हम बीवर लोग सबसे मीठे पेड़ की सबसे अच्छी छाल खाते हैं, पानी में डुबकी मार लेते हैं और जाड़ों में अपने अपने घरों में सो जाते हैं।"

लड़का बोला — "तुम्हारी ज़िन्दगी भी बहुत अच्छी है पर मैं पेड़ों की छाल नहीं खा सकता और मुझे मालूम है कि मैं तालाब के ठंडे पानी में तो जम ही जाऊँगा।"

भेड़िया बोला — "मेरे बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? मैं जंगलों में भागता फिरता हूँ और जिन छोटे जानवरों को मैं खाना चाहता हूँ उनको पकड़ लेता हूँ। मैं एक गरम घर में रहता हूँ और तुम मेरे साथ आराम से रहोगे।"

लड़का बोला — "भेड़िये भाई, तुम भी बहुत दयालु हो। लेकिन क्योंकि सारे जानवर मेरे ऊपर इतने मेहरबान हैं कि मैं उनमें से किसी को भी खाना नहीं चाहूँगा।"

[14] Beaver is hedgehog type animal which lives under the earth and is famous for building dams, canals and lodges etc. See its picture above.

इतने में हिरन बोला — "तब तुम मेरे बच्चे बन कर रहो। हमारे साथ जंगलों में भागो, पेड़ों की डंडियॉ खाओ और मैदानों की घास खाओ।"

लड़का बोला — "नहीं दोस्त हिरन, तुम बहुत सुन्दर हो और बहुत अच्छे हो पर तुम इतने तेज़ हो कि भागने में तो मैं तुमसे हमेशा ही पीछे रह जाऊँगा।"

उसके बाद एक बूढ़ी मादा भालू उस लड़के के पास आयी और उसको बहुत देर तक ऊपर से नीचे तक देखती रही। फिर जब वह बोली तो उसकी आवाज फटी फटी सी थी।

वह बोली — "तुम हमारे साथ आ सकते हो और एक भालू बन कर रह सकते हो। हम भालू धीरे धीरे चलते हैं और सख्त आवाज में बोलते हैं। पर हमारा दिल बहुत नरम है।

हम बैरीज़[15] और जड़ें खाते हैं जो जंगलों में उगते हैं। लम्बे जाड़ों के मौसम में हमारे बाल तुमको गरम रखने में सहायता करेंगे।"

लड़का बोला — "हॉ मैं भालू के साथ चलूँगा। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और तुम्हारे परिवार में रहूँगा।"

[15] Berry is a kind of fruit normally grown on shrubs – such as blue berries, raspberries, black berries, our Indian Ber or Jharberee Ke Ber or Phaalasaa etc

सो वह लड़का जिसका कोई परिवार नहीं था भालू के साथ रहने चला गया।

उस मॉ भालू के दो बच्चे और भी थे। वे उस लड़के के भाई बन गये। वे सब एक साथ लुढ़कते और खेलते। जल्दी ही वह लड़का भालू जितना ताकतवर हो गया।

मॉ भालू ने उस लड़के को कहा — "तुम सावधान रहना। तुम्हारे भाइयों के पंजे बहुत तेज़ हैं। जहॉ भी वे तुमको उनसे खुरच देंगे वहीं पर तुम्हारे उन जैसे बाल उग आयेंगे।"

इस तरह वे लोग जंगल में बहुत दिनों तक रहे और मॉ भालू ने उस लड़के को बहुत कुछ सिखाया।

एक दिन वे सब जंगल में बैरीज़ ढूँढ रहे थे कि मॉ भालू ने उनको चुप रहने को कहा। वह बोली — "लगता है कोई शिकारी है यहॉ।" उन सबने ध्यान से सुना तो वाकई उनको किसी आदमी के पैरों की आवाज सुनायी दी।

बूढ़ी मॉ भालू मुस्कुरा कर बोली — "हमें इस शिकारी से डरने की जरूरत नहीं है। इसके कदम भारी हैं और जिधर भी यह जायेगा पत्तियॉ और डंडियॉ हमें बता देंगी कि यह कहॉ है।"

एक दूसरे समय पर मॉ भालू ने फिर से उन सबको चुप रहने के लिये कहा — "सुनो, एक दूसरा शिकारी।" उन्होंने फिर सुनने की कोशिश की तो उनको गाने की आवाज सुनायी पड़ी।

बूढ़ी मॉ भालू फिर मुस्कुरा कर बोली — "यह भी कोई खतरनाक शिकारी नहीं है। यह तो बोलने वाला है जैसे जैसे यह चलता जाता है वैसे वैसे बोलता जाता है।

जो शिकार के समय बोलता रहता है वह यह भूल जाता है कि जंगल में हर चीज़ के कान होते हैं। हम भालू लोग तो वह गाना भी सुन लेते हैं जो लोग गाते भी नहीं केवल सोचते ही हैं।"

इस तरह वे सब आनन्द से रह रहे थे कि एक दिन बूढ़ी मॉ भालू ने उनको फिर से चुप किया। इस बार उसकी ऑखों में डर दिखायी दे रहा था।

वह बोली — "सुनो, वह जो दो टॉगों पर और चार टॉगों पर शिकार करता है वह हमारे लिये बहुत खतरनाक है। हमको हमेशा यह प्रार्थना करते रहना चाहिये कि वह हमको न ढूँढ सके।

क्योंकि चार टॉग वाले जो दो टॉग वाले के साथ शिकार करते हैं हम जहॉ भी जायें वे हम लोगों को ढूँढ सकते हैं। और वह आदमी भी जो उनके साथ होता है जब तक चैन से नहीं बैठता जब तक कि उसको जो शिकार चाहिये उसको पकड़ नहीं लेता।"

उसी समय उन्होंने एक कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनी। बूढ़ी मॉ भालू चिल्लायी — "भागो भागो, अपनी जान बचाओ। चार पैर वालों को हमारी खुशबू आ गयी है।"

बस चारों भाग लिये। उन्होंने नाले पार किये, पहाड़ियॉ चढ़े पर फिर भी कुत्तों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा।

वे दलदल में से भागे, वे घनी झाड़ियों में से भागे पर फिर भी शिकारी लोग उनके पीछे थे। वे घाटियों में से भागे वे कॅटीली जमीन में से हो कर भागे पर कुत्तों की आवाज से नहीं बच सके।

आखिर वे थक कर चूर हो गये। इतने में वे चारों एक खोखले लट्ठे के पास आ गये। बूढ़ी मॉ भालू बोली — "बस यही हमारी आखिरी उम्मीद है अब तुम सब इस लट्ठे में घुस जाओ।"

वे सभी उस लट्ठे में घुस गये और हॉफते और डरते सॉस रोक कर बैठ गये। कुछ देर तक तो कोई शोर नहीं सुनायी दिया पर फिर थोड़ी ही देर में कुत्ते उनको सूँघते हुए उस लट्ठे के पास आ पहुॅचे।

बूढ़ी मॉ भालू बहुत ज़ोर से उनके ऊपर गुर्रायी तो वे उनके पास नहीं जा पाये। सो कुछ देर के लिये फिर से सब कुछ शान्त हो गया। लड़के को लगा कि अब उसका परिवार सुरक्षित है पर ऐसा नहीं था। उसको धुॅए की खुशबू आयी।

उस शिकारी ने कुछ पत्तियॉ और लकड़ियॉ इकट्ठी कर ली थीं और उनको उस लट्ठे के पास ला कर उनमें आग लगा दी थीं ताकि वे उस धुॅए की खुशबू सूँघ कर बाहर निकल आयें।

अब उस लड़के से नहीं रहा गया वह चिल्लाया — "मेहरबानी करके मेरे दोस्तों को कोई नुकसान मत पहुॅचाइये।"

इसके जवाब में उसको बाहर से एक जानी पहचानी आवाज सुनायी दी — "कौन बोल रहा है यह? क्या कोई आदमी इस लट्ठे के अन्दर है?"

फिर उस लट्ठे के पास से लकड़ियॉ हटाने की आवाज आयी और धुँआ भी अन्दर आना बन्द हो गया। वह लड़का लट्ठे में से बाहर निकल आया और उस शिकारी की तरफ देखा तो वह तो उसका मामा था।

उसका मामा ऑखों में ऑसू भर कर चिल्लाया — "ओ मेरे भानजे। क्या यह वाकई में तुम हो? मैंने तुमको गुफा में छोड़ने के बाद सोचा कि मैं तो बहुत ही बेवकूफ और बेरहम आदमी हूँ जो अपने भानजे को इस तरह से गुफा में बन्द करके चला आया।

सो मैं तुमको ढूँढने के लिये फिर गुफा पर आया पर तब तक तुम वहॉ से जा चुके थे। वहॉ बहुत सारे जानवरों के पैरों के निशान भी थे सो मुझे लगा कि उन्होंने तुमको मार दिया।"

और सच भी यही था। मामा को घर पहुँचने से पहले ही लगा कि वह बहुत ही नीच आदमी था। सो वह तुरन्त ही वापस लौट पड़ा और निश्चय किया कि वह अपनी बहिन के लड़के को अपने बेटे की तरह से रखेगा।

वह और भी ज्यादा दुखी हो गया था जब उसने देखा कि उस गुफा से उसका भानजा गायब हो गया था।

लड़का बोला — "हॉ मामा मैं ही हूँ। आपके छोड़ जाने के बाद इन्हीं भालुओं ने मेरी देखभाल की। ये अब मेरे परिवार की तरह हैं। मामा इनको मारना नहीं।" मामा ने हॉ में सिर हिलाया और अपने शिकारी कुत्ते एक पेड़ से बॉध दिये।

अभी भी डरते हुए वह बूढ़ी मॉ भालू अपने बच्चों के साथ लट्ठे में से बाहर निकली। वे जब उस लड़के से बात कर रहे थे तो उनके शब्द उस लड़के के मामा को तो केवल उनकी गुर्राहट से ज़्यादा कुछ नहीं लगे। पर उन्होंने कहा कि अब उसको एक आदमी बन जाना चाहिये।

बूढ़ी मॉ भालू ने उस लड़के से कहा — "हम आपस में हमेशा दोस्त रहेंगे। तुम खुश रहना।"

और वह अपने दोनों बेटों को ले कर जंगल में चली गयी। वह लड़का अपने मामा के साथ घर चला आया और खुशी खुशी उसके साथ रहा।

बहुत दिनों तक वह उस जानवर के प्रेम को याद करता रहा और जितने दिन जिया उतने दिनों तक जानवरों का दोस्त बना रहा।

7 भालू आदमी[16]

भालू की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के अमेरिका देश के आदिवासियों में कही सुनी जाती है। इस लोक कथा में एक आदमी भालू के साथ रहते रहते आदमी से भालू बन जाता है। पर क्या वह फिर से आदमी के रूप में आ पाता है? यह जानने के लिये पढ़ो यह लोक कथा।

एक बार वसन्त के मौसम में उत्तरी अमेरिका की चेरोकी जाति[17] का एक आदमी जिसका नाम तेज़ हवा था अपनी पत्नी से विदा ले कर एक कोहरा छाये हुए पहाड़ पर शिकार के लिये चल पड़ा।

रास्ते में एक जंगल पड़ता था। उस जंगल में एक भालू तीर से घायल पड़ा था। जब उस भालू ने तेज़ हवा को उधर से जाते देखा तो वह वहॉ से भागा। तेज़ हवा ने उसका पीछा किया और एक के बाद एक तीर मार कर उसे नीचे गिराने की कोशिश की परन्तु वह उसको गिरा नहीं सका।

तेज़ हवा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा कैसे हो रहा था। उसको मालूम ही नहीं था कि उस भालू के पास एक ऐसी अनजान

[16] A Bearman – a folktale from Cherokee Tribe, America, North America
[17] Cherokee – a tribe from North Amrican natives

ताकत थी जिससे वह बात भी कर सकता था और कोई आदमी क्या सोच रहा है यह तक भी बता सकता था।

आखिरकार वह काला भालू भागते भागते रुक गया और उसने अपने शरीर से सारे तीर निकाल कर तेज़ हवा को दे दिये।

फिर वह उससे बोला — "तुम्हारे इन तीरों का कोई फायदा नहीं क्योंकि ये मेरा कुछ नहीं बिगड़ सकते। तुम मुझको नहीं मार सकते। आओ, तुम मेरे साथ आओ मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि भालू कैसे रहते हैं।"

तेज़ हवा ने सोचा "यदि मैं इसके साथ गया तो यह मुझे मार डालेगा।"

अब क्योंकि भालू के पास तो वह अनजान ताकत थी जिससे वह दूसरों के मन की बात भी पढ़ लेता था इसलिये उसने तुरन्त ही यह जान लिया कि तेज़ हवा क्या सोच रहा था इसलिये वह तुरन्त ही बोला — "तुम मेरे साथ चलो तो, मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। तुम मेरे साथ निडर हो कर आ सकते हो।"

तेज़ हवा ने फिर सोचा "यदि मैं इसके साथ गया तो वहाँ मैं खाऊँगा क्या?"

भालू ने यह भी जान लिया कि वह अपने खाने के बारे में सोच रहा था सो वह फिर बोला — "तुम खाने की बिल्कुल भी चिन्ता न करो मेरे पास तुम्हारे लायक बहुत खाना है।"

सो वे दोनों वहॉ से चल दिये। तेज़ हवा को साथ ले कर भालू एक गुफा तक आया और बोला — "हम यहॉ रहते तो नहीं हैं पर आज हम लोग यहॉ पर एक मीटिंग कर रहे हैं। तुम भी देखो कि हम लोग क्या करते हैं।"

वे लोग अन्दर आये तो तेज़ हवा क्या देखता है कि वह गुफा तो अन्दर आ कर बहुत बड़ी हो गयी है और वहॉ पर छोटे बड़े, जवान बूढ़े, काले कत्थई सभी प्रकार के भालू बैठे हुए हैं। वहॉ एक बड़ा सफेद भालू भी था जो उन सबका सरदार दिखायी दे रहा था।

तेज़ हवा भी वहीं एक तरफ को बैठ गया परन्तु सभी भालुओं को तुरन्त ही उसकी बू आ गयी।

एक भालू बोला — "यह आदमी की बू कहॉ से आ रही है?"

सफेद भालू बोला — "ऐसा न बोलो। आज हमारे बीच में एक अजनबी बैठा है। उसे ऐसे ही बैठा रहने दो।"

यह सुन कर भालुओं ने अपनी मीटिंग शुरू कर दी। तेज़ हवा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसको उनकी सारी बातें समझ में आ रही थीं।

वे भालू पहाड़ों पर खाने की कमी के बारे में बात कर रहे थे कि उनको उस खाने की कमी को खत्म करने के लिये क्या करना चाहिये। वे इसका कोई तरकीब निकालने की कोशिश में थे।

मीटिंग के बाद उन्होंने नाचना शुरू कर दिया। जब वे नाच रहे थे तो एक भालू की नजर तेज़ हवा के तीर कमान पर पड़ गयी।

वह बोला — "यही तो है वह जिससे आदमी हम लोगों को मारता है। देखें हम भी इसे इस्तेमाल कर सकते हैं या नहीं।"

ऐसा कह कर उसने तेज़ हवा का तीर कमान उठा लिया और उस पर तीर चढ़ाने की कोशिश करने लगा। जैसे ही उसने कमान की रस्सी खींची कि वह रस्सी उसके पंजों में फॅस गयी और तीर नीचे गिर पड़ा। यह देख कर सारे भालू हॅस पड़े। फिर उसने वह तीर कमान तेज़ हवा को वापस दे दिया।

मीटिंग समाप्त होने के बाद तेज़ हवा उस काले भालू के साथ एक छोटी गुफा में आया। भालू उसको वह गुफा दिखाते हुए बोला — "देखो मैं यहॉ रहता हूँ।"

तेज़ हवा को अब तक बहुत ज़ोर की भूख लग आयी थी पर उसको वहॉ खाना कहीं भी नहीं दिखायी दे रहा था।

भालू ने जान लिया कि वह क्या सोच रहा है सो वह तुरन्त ही अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और उसने अपने आगे वाले पैरों से हवा में कुछ निशान बनाये और फिर उन पंजों को तेज़ हवा की तरफ बढ़ा दिया।

तेज हवा ने देखा कि उसके पंजों में चेस्टनट[18] भरे हुए थे। उसने यह जादू दोबारा किया तो अबकी बार उसके पंजों में रसभरियॉ थीं।

[18] Chestnut is a kind of nut which is when eaten roasted tastes very good. See its picture above.

इसी तरह उसने तेज़ हवा को कई सारी खाने की चीज़ें दीं। और इस तरह तेज़ हवा उस भालू के पास उस गुफा में कई महीनों तक रहा।

कुछ महीनों के बाद उसने देखा कि उसके शरीर पर भालू की तरह के बाल उग आये हैं और उसने भालुओं जैसा खाना खाना भी शुरू कर दिया है। वह भालुओं की तरह बरताव भी करने लगा है। पर भगवान का लाख लाख धन्यवाद था कि वह अभी अपने दो पैरों पर खड़े हो कर ही चलता था भालू की तरह चार पैर पर नहीं।

एक साल बीत गया था। अब फिर से वसन्त आ गया था। एक दिन भालू बोला कि आज मैंने सपना देखा कि चेरोकी लोग एक बड़े शिकार की तैयारी कर रहे हैं।"

तेज़ हवा ने पूछा — "क्या मेरी पत्नी अभी तक मेरा इन्तजार कर रही है?"

भालू बोला — "हॉ, वह अभी तक तुम्हारा इन्तजार कर रही है। पर तुम तो अब एक भालू आदमी बन चुके हो इसलिये अगर तुम अपने लोगों के बीच वापस जाना चाहते हो तो तुमको बिना खाये पिये किसी ऐसी बन्द जगह पर रहना होगा जहॉ लोग तुमको देखें नहीं। उसके बाद तुम फिर आदमी बन जाओगे।"

कुछ ही दिनों बाद चेरोकी शिकारियों की एक टोली वहॉ आ गयी। काला भालू और तेज़ हवा दोनों ही गुफा में छिप कर बैठ गये पर शिकारी कुत्तों ने उन दोनों का पता लगा लिया।

भालू बोला — "देखो, अब मेरी तीर न खाने की ताकत खत्म हो गयी है इसलिये तुम्हारे लोग तो मुझे अब मार ही डालेंगे पर वे तुमको कोई नुकसान पहुँचायेंगे।

वे तुमको घर ले जायेंगे। सो अगर तुम वाकई आदमी बनना चाहते हो तो जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसे अच्छी तरह याद रखना।

और भी एक बात सुनो। वे लोग मुझे मार मार कर बाहर खदेड़ देंगे और मेरे टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे। इसके बाद तुम मेरे शरीर के टुकड़ों को पत्तियों से ढक देना। जब वे तुमको ले जा रहे होंगे तब अगर तुम पीछे मुड़ कर देखोगे तो तुमको कुछ दिखायी देगा।"

भालू ने जैसा तेज़ हवा से कहा था लोगों ने उसके साथ वैसा ही किया। पहले उन्होंने भालू को मार डाला, फिर वे उसे गुफा के बाहर घसीट कर ले गये और फिर उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दिये।

तेज़ हवा इस डर से गुफा के अन्दर ही छिपा रहा कि वे लोग उसे कहीं भालू न समझ लें और उसको भी उसी तरीके से न मार दें जैसे उन्होंने भालू को मारा था। परन्तु कुत्ते उस गुफा के बाहर ही भोंकते रहे अन्दर नहीं आये।

इस पर शिकारियों ने गुफा के अन्दर झॉका तो उन्होंने देखा कि एक बालों वाला आदमी सीधा खड़ा हुआ है। उन शिकारियों में से एक आदमी उसको पहचान गया कि वह तेज़ हवा था।

यह सोचते हुए कि वह भालुओं का बन्दी था उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह उन लोगों के साथ घर लौट जाना चाहेगा?

पर उन लोगों ने साथ में उसको यह भी बताया कि अगर वह आदमी बनना चाहता है तो उसको कम से कम सात दिन बिना कुछ खाये पिये एक कमरे में बन्द रहना पड़ेगा।

तेज़ हवा तैयार हो गया और शिकारी उसको साथ ले कर चल दिये।

गुफा से बाहर निकल कर भालू के शरीर के टुकड़ों को तेज़ हवा ने पत्तियों से ढक दिया और आगे बढ़ गया। कुछ दूर जाने के बाद उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उन पत्तियों के नीचे से भालू उठ कर अपनी गुफा की तरफ जा रहा था।

जब शिकारी घर पहुँचे तो वे तेज़ हवा को एक खाली मकान में ले गये और उस मकान का दरवाजा बन्द कर दिया।

तेज़ हवा ने उनको किसी से कुछ भी कहने को मना कर दिया था पर किसी ने गॉव में कहीं कुछ कह दिया सो अगले ही दिन तेज़ हवा की पत्नी को पता चल गया कि उसका पति उसी गॉव में आ गया है।

बस फिर क्या था तेज़ हवा की पत्नी जल्दी जल्दी उन शिकारियों के पास पहुँची और उनसे अपने पति को दिखा देने की प्रार्थना की।

शिकारियों ने उसको बहुत समझाया कि उसको अपने पति को देखने के लिये अभी सात दिन तक इन्तजार करना चाहिये उसके बाद ही वह बिल्कुल वैसे ही रूप में उसके सामने आ पायेगा जिस रूप में उसने यह गॉव एक साल पहले छोड़ा था। पर उसकी समझ में ही नहीं आया कि ऐसा कैसे हो सकता है।

तेज़ हवा की पत्नी यह सुन कर बहुत निराश हुई और घर चली गयी लेकिन वह उन शिकारियों के पास रोज आती रही और उनसे बराबर कहती रही कि वे उसको उसके पति से मिलवा दें।

आखिर पॉचवें दिन जब उसने बहुत जिद की तो वे उसको उस घर की तरफ ले चले जिसमें तेज़ हवा बन्द था। वहॉ आ कर उन्होंने उस घर का दरवाजा खोल दिया और तेज हवा को बाहर आने को कहा। तेज़ हवा बेचारा बाहर आ गया।

समय से पहले निकलने की वजह से उसके शरीर पर अभी भी कुछ बाल बाकी बचे थे पर उसकी पत्नी उसको देख कर इतनी अधिक खुश हुई कि वह उसको जिद करके अपने घर ले आयी। तेज़ हवा उसके साथ चला तो गया परन्तु कुछ ही दिनों बाद वह मर गया।

चेरोकी लोगों ने यह जान लिया कि यह काम उस भालू का है जिसके पास वह रहता था।

आज भी उस गॉव में वसन्त के पहले कुछ दिनों में दो भालू देखे जाते हैं – एक चार पैर पर चलता हुआ और दूसरा दो पैर पर चलता हुआ।

8 बैला और भालू[19]

भालू की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली है। इस लोक कथा में एक बच्ची भालू को धोखा दे कर उसके चंगुल से निकल भागती है।

एक बूढ़े पति पत्नी थे जिनके एक पोती थी जिसका नाम था बैला। हालॉकि उनका घर एक अँधेरे जंगल के पास था फिर भी उनका मकान था बहुत साफ सुथरा। हर गरमियों में उनकी पोती बैला उनके पास उनके उस साफ सुथरे मकान में रहने के लिये आ जाती थी।

एक गरमी के दिन उसकी दोस्तों ने उसको मैदान में जाने के लिये बुलाया ताकि वे वहॉ से मुशरूम[20] तोड़ सकें। बैला चिल्लायी — दादी, बाबा, क्या मैं खेलने जाऊँ? मैं आपके लिये बहुत सारे मुशरूम तोड़ कर लाऊँगी। मैं वायदा करती हूँ।"

[19] Bella and the Bear – a folktale from Russia, Asia. From the Book :
"Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[20] Mushroom are any of the several edible species of fleshy, spore-bearing fruiting body of a fungus, typically produced above ground on soil or on its food source.

वे बूढ़े पति पत्नी बोले — "हॉ हॉ बेटी, जाओ भाग जाओ। पर जरा ध्यान रखना कि जंगल के ज़्यादा पास मत जाना नहीं तो भेड़िये या भालू तुम्हें खा जायेंगे।"

"ठीक है।" कह कर बैला अपनी दोस्तों के साथ जंगल के किनारे वाले मैदान की तरफ भाग गयी। बैला को मालूम था कि सबसे अच्छे और सबसे बड़े मशरूम जंगल में लगे हुए पेड़ों और झाड़ियों के नीचे ही मिलते थे।

अब क्योंकि वह यह जानती थी कि अच्छे और बड़े मुशरूम कहॉ मिलते हैं तो वह उनको लेने के लिये अपनी धुन में आगे बढ़ती हुई अपने दोस्तों से कब अलग हो गयी उसको पता ही नहीं चला।

वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ की तरफ एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी की तरफ जाती रही और अपनी टोकरी बढ़िया बढ़िया मुशरूमों से भरती रही – कत्थई, सफेद, लाल, पीले।

मुशरूम इकट्ठा करते करते वह जंगल में अन्दर और और अन्दर तक चलती चली गयी... कि अचानक उसने अपने सामने देखा और उसको लगा कि वह तो खो गयी है। वह डर गयी।

डर के मारे वह चिल्लायी — "हलो ओ ओ ओ। हलो ओ ओ ओ।" पर उसके हलो का कोई जवाब ही नहीं दे रहा था।

पर कोई दूसरा था जो उसको सुन रहा था। तभी पेड़ों की पत्तियॉ में सरसराहट हुई और एक कत्थई रंग का भालू उनमें से निकल कर बाहर आ गया।

जब उसने उस छोटी लड़की को देखा तो उसने खुशी से अपनी बॉहें उसकी तरफ फैला दीं। वह बोला — "आहा, तुम तो मेरी एक बहुत अच्छी नौकरानी साबित होगी मेरी प्यारी।"

कह कर उसने उस लड़की को अपनी बॉहों में उठाया और उसको अँधेरे जंगल में अपने घर ले गया। जब वह जंगल के अन्दर पहुँच गया तो वह उस पर गुर्रा कर बोला — "चलो आग जलाओ और मेरे लिये दलिया बनाओ। मुझे भूख लगी है। फिर मेरा घर साफ करो।"

बैला की नयी खराब ज़िन्दगी भालू के घर में इस तरह शुरू हुई। बैला इस डर से कि भालू कहीं उसको खा न ले उसके घर में रोज ही सुबह से शाम तक काम करती पर साथ में वह यह भी सोचती रहती कि वह वहॉ से किस तरह से बच कर भाग सकती है। आखिर उसके दिमाग में एक विचार आया।

एक दिन वह भालू से बड़ी नम्रता से बोली — "मिस्टर भालू, क्या मैं एक दिन के लिये अपने घर जा सकती हूँ ताकि मैं अपने दादी बाबा को यह दिखा आऊँ कि मैं ज़िन्दा हूँ और ठीक हूँ।"

भालू गुर्राया — "नहीं कभी नहीं। तुम यहाँ से कहीं नहीं जाओगी। अगर तुम्हें उनके लिये कोई सन्देश देना भी है तो वह सन्देश उनके लिये मैं खुद ले कर जाऊँगा।"

बैला ने ठीक यही प्लान किया था।

सो उसने कुछ चैरी पाई बनायीं और उनको एक प्लेट में ऊँचे तक सजा दिया। फिर वह एक बड़ी सी टोकरी ले आयी और भालू को बुला कर उससे कहा — "मिस्टर भालू, मैं ये पाई इस बड़ी टोकरी में रख रही हूँ। तुम इनको मेरे घर ले जाओ और मेरे दादी बाबा को दे देना। और उनसे कहना कि ये पाई आपकी बेटी ने आपके लिये भिजवायी हैं।

पर याद रखना कि इस टोकरी को तुम रास्ते में खोलना नहीं और इन पाई को तो तुम छूना भी नहीं। मैं इस मकान की छत से तुमको देखती रहूँगी।"

भालू बोला — "ठीक है ओ सुन्दर लड़की। पर जाने से पहले मैं ज़रा सा सो लूँ।"

जैसे ही भालू सोया बैला जल्दी से घर की छत पर चढ़ गयी। वहाँ जा कर उसने एक लट्ठे की अपनी जैसी एक मूर्ति बनायी और उसको वहाँ खड़ा करके उसको अपना कोट और स्कार्फ पहना दिया।

यह सब करके वह नीचे आ गयी। फिर वह उस टोकरी में बैठ गयी जिसमें उसने पाई रखी थीं और पाई की प्लेटें अपने सिर पर रख ली।

जब भालू सो कर उठा तो उसने देखा कि पाई की टोकरी तैयार थी। उसने उस टोकरी को अपनी चौड़ी पीठ पर रख लिया और गॉव की तरफ चल दिया।

वह पेड़ों के बीच से हो कर चलता जा रहा था। बोझ की वजह से वह लड़खड़ा कर चल रहा था सो वह उसकी वजह से थक भी बहुत जल्दी गया।

वह एक पेड़ के टूटे हुए तने के पास रुक गया और आराम करने के लिये वहॉ बैठ गया।

उसको लगा कि पहले वह उस टोकरी में से एक पाई खाले तब वह आगे जायेगा पर जैसे ही वह टोकरी खोलने वाला था कि उसको बैला की आवाज सुनायी पड़ी — "तुम वहॉ सारे दिन मत बैठो मिस्टर भालू और पाई तो तुम बिल्कुल छूना भी मत।"

भालू ने इधर उधर देखा तो उसको अपने घर की छत पर केवल बैला की मूर्ति ही दिखायी दी। वह बोला — "ओह इस लड़की की ऑखें तो बहुत तेज़ हैं।"

वह उठा और फिर चल पड़ा। वह अपना वह भारी बोझ ले कर फिर चलता गया चलता गया। जल्दी ही वह एक दूसरे कटे हुए पेड़ के तने के पास आ गया।

बोझे से थके हुए उसने सोचा कि अब तो मैं अपने घर से काफी दूर आ गया हूँ अब वह लड़की मुझे नहीं देख पायेगी सो मैं यहाँ थोड़ी देर आराम करता हूँ और एक पाई खाता हूँ। सो वह वहीं बैठ गया।

जैसे ही वह पाई की टोकरी खोलना चाहता था कि एक बार फिर बैला की आवाज सुनायी पड़ी — "बैठो नहीं। और हाँ पाई तो बिल्कुल छूना भी नहीं। जैसा कि मैंने तुमसे कहा था सीधे मेरे गाँव जाओ और ये पाई मेरे दादी बाबा को दे कर आओ।"

भालू ने फिर पीछे देखा पर इस बार तो उसको अपना घर भी दिखायी नहीं दिया। उसने फिर वही सोचा कि इस लड़की की आँखें तो बहुत ही तेज़ हैं पर यह देख कहाँ से रही है। सो वह फिर चल दिया।

पेड़ों के बीच से होता हुआ, घाटी में से गुजरता हुआ, घास के मैदानों को पार करता हुआ आखिर वह एक बड़े से घास के मैदान में आ निकला।

अब तक वह बहुत थक गया था। उसने सोचा "मुझे यहाँ अपने थके हुए पैरों को कुछ आराम जरूर देना चाहिये और मुझे अब भूख भी बहुत लगी है सो मैं एक पाई भी खा लेता हूँ और यहाँ

तो वह मुझे देख भी नहीं पायेगी क्योंकि अब तो मैं अपने घर से बहुत दूर आ गया हूँ।"

पर यहाँ भी उसको दूर से एक आवाज आती सुनायी दी — "मिस्टर भालू, मैं तुम्हें यहाँ से देख रही हूँ। और उन चैरी पाई को छूने की तो तुम हिम्मत भी नहीं करना। चलते जाओ बस चलते जाओ।"

इस बार भालू कुछ परेशान हो गया और डर भी गया। वह फिर गुर्राया "इसकी आँखें कितनी तेज़ हैं, उफ़।" और फिर आगे चल दिया।

चलते चलते आखिर वह बैला के गाँव आ पहुँचा। वहाँ जा कर उसने बैला के घर का दरवाजा खटखटाया — "दरवाजा खोलो मैं आपके लिये आपकी पोती की तरफ से कुछ भेंट ले कर आया हूँ।"

जैसे ही बैला के दादी बाबा ने यह सुना तो वे दरवाजा खोलने भागे। उधर भालू की आवाज सुन कर गाँव भर के कुत्ते वहाँ भौंकते हुए आ गये।

कुत्तों के भौंकने से वह भालू इतना डर गया कि उसने वह टोकरी तो वहीं दरवाजे पर छोड़ी और बिना पीछे देखे सीधा जंगल की तरफ भाग गया।

जब बैला के दादी बाबा ने दरवाजा खोला तो उनको तो यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक टोकरी उनके दरवाजे पर रखी थी और वहॉ कोई भी नहीं था।

बैला के बाबा ने टोकरी का ढक्कन उठाया और उसमें अपनी ऑखें गड़ा कर देखा तो उनको बड़ी मुश्किल से अपनी ऑखों पर विश्वास हुआ कि चैरी पाई के नीचे उनकी छोटी सी पोती ज़िन्दा और ठीक ठाक बैठी थी।

बैला के दादी बाबा दोनों खुशी से नाच उठे। उन्होंने बैला को टोकरी में से निकाल कर गले लगा लिया और उसकी होशियारी की बहुत तारीफ की कि किस तरह वह उस भालू को चकमा दे कर अपने घर वापस आ गयी थी।

जल्दी ही यह खबर बैला की दोस्तों को भी मिल गयी सो वे भी वहीं आ गयीं। उन्होंने भी बैला को गले लगाया। बैला भी भालू के चंगुल से छूट कर बहुत खुश थी।

इस बीच भालू घने जंगल में से हो कर अपने घर पहुॅचा और ऊपर छत पर जा कर उस मूर्ति पर चिल्लाया कि वह उसके लिये चाय बनाये।

पर उसको यह जानने में बहुत देर नहीं लगी कि वह बैला नहीं बल्कि उसकी मूर्ति थी और बैला तो उसको चकमा दे कर उस टोकरी में बैठ कर निकल गयी थी।

9 भालू का बुरा सौदा[21]

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत बूढ़ा लकड़हारा अपनी बहुत ही बूढ़ी पत्नी के साथ एक अमीर आदमी के बागीचे के पास एक बहुत छोटे से मकान में रहता था।

वह उसके इतना पास रहता था कि उसके बागीचे एक नाशपाती के पेड़ की शाखें उसके मकान तक आती थीं।

इसलिये दोनों में यह तय हुआ कि अगर उस पेड़ का कोई फल उस लकड़हारे के घर के ऑगन में गिरा तो उसको उस लकड़हारे और उसकी पत्नी को खाने का अधिकार होगा।

अब तुम लोग सोच सकते हो कि उस लकड़हारे का परिवार तो बस उस पेड़ पर लगी नाशपातियॉ पक कर नीचे गिरने का ही इन्तजार करता रहता होगा।

उन फलों के गिराने के लिये वह तूफान आने की या फिर उड़ती हुई लोमड़ियों[22] के आने की या फिर किसी और चीज़ की

[21] Bear's Bad Bargain (Tale No 4) – A folktale from Punjab, India, Asia.
Adapted from the Web Site : http://digital.library.upenn.edu/women/steel/punjab/punjab-1.html
Taken from the book "Tales of the Punjab" By Flora Annie Steel. London: Macmillan & Co. 1894
[22] Translated for the words "Flying Foxes"

जिससे भी वे फल नीचे गिर जाते उसकी भी प्रार्थना करता रहता होगा।

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। लकड़हारे की बूढ़ी पत्नी अपने बूढ़े पति से हमेशा इस बात की शिकायत करती रहती या उसे डॉटती रहती कि इस तरह से तो वे यकीनन भिखारी बन जायेंगे। उसने अपने पति को केवल सूखी रोटी देना शुरू कर दिया और उससे जिद की कि वह और ज़्यादा मेहनत से काम करे।

इस तरह से वह बूढ़ा दुबला और और दुबला होता चला गया। और यह सब इसलिये हो रहा था क्योंकि नाशपातियॉ उस पेड़ से टूट कर उनके ऑगन में नहीं गिर रही थीं।

आखिर एक दिन लकड़हारे ने अपनी पत्नी से साफ साफ कह दिया कि वह और ज़्यादा काम नहीं करेगा जब तक कि वह उसको खाने में खिचड़ी[23] नहीं देगी।

सो बुढ़िया ने मुॅह बनाते हुए दाल और चावल निकाले, कुछ घी और मसाले निकाले और नमकीन खिचड़ी बनाना शुरू किया। उसकी तो खुशबू से ही भूख बढ़ जाती थी। लकड़हारा तो बस उसके तैयार होने का इन्तजार ही कर रहा था कि कब वह तैयार हो और कब वह उसे खाये।

पर उसकी लालची पत्नी बोली — "नहीं नहीं, अभी नहीं जब तक तुम मुझे लकड़ी का एक और गट्ठर ला कर नहीं दे दोगे तब

[23] Khichdi is a dish cooked by mixing rice with pulse, normally equal parts, in water with salt.

तक मैं तुम्हें खिचड़ी नहीं दूँगी। और ध्यान रखना कि वह अच्छा बड़ा गट्ठर होना चाहिये। तुमको खाने के लिये काम करना चाहिये।"

यह सुन कर बेचारा लकड़हारा जंगल की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने इतनी लगन और मेहनत से काम किया कि उसके पास जल्दी ही लकड़ियों का एक बड़ा सा गट्ठर जमा हो गया। हर कुल्हाड़ी पेड़ पर मारने से उसको खिचड़ी की खुशबू आती और वह उस स्वादिष्ट खाने के बारे में ही सोचता रहा।

वह अपना गट्ठर उठा कर वहाँ से घर की तरफ चलने ही वाला था कि कहीं से एक भालू वहाँ आ गया। उसकी नाक हवा में इधर उधर कुछ सूँघ रही थी और उसकी छोटी छोटी आँखें कुछ देखने की कोशिश कर रही थीं। क्योंकि वैसे तो भालू लोग कुल मिला कर बहुत अच्छे होते हैं पर उनकी जानने की इच्छा बहुत तेज़ होती है।

सो भालू बोला — "भगवान तुम्हें सुखी रखे मेरे दोस्त। तुम इतने बड़े लकड़ी के गट्ठर का क्या करने वाले हो।"

लकड़हारा बोला — "यह मेरी पत्नी के लिये है।" कह कर वह अपने होठ चाटते हुए धीरे से आगे बोला — "असल में बात क्या है कि आज उसने मेरे लिये इतनी बढ़िया खिचड़ी बनायी है कि बस कुछ पूछो मत।

और उसने मुझसे यह भी कहा है कि अगर में काफी सारी लकड़ी उसके लिये काट कर ले जाऊँ तो वह मुझे बहुत सारी

खिचड़ी खाने के लिये देगी। ओह तुमको उस खिचड़ी की खुशबू सूँघनी चाहिये। बहुत ही बढ़िया बनती है वह।" यह सुन कर भालू के मुँह में पानी आ गया। उसको तो उसके नाम से ही भूख लग आयी थी।

भालू भी अपने होठ चाटते हुए बोला — "क्या तुम समझते हो कि तुम्हारी पत्नी मुझे भी थोड़ी सी खिचड़ी खिलायेगी?"

लकड़हारा चालाकी से बोला — "शायद। अगर ये लकड़ी बहुत सारी हुई तो खिलायेगी न।"

भालू बोला — "क्या तीन सौ बीस पौंड[24] लकड़ी काफी होगी?"

लकड़हारा ना में सिर हिलाते हुए बोला — "मुझे डर है कि नहीं। तुम्हें पता है कि खिचड़ी एक बहुत ही मँहगा खाना है। उसमें चावल पड़ता है बहुत सारा घी पड़ता है दाल पड़ती है और..."

भालू बोला — "तो फिर क्या छह सौ चालीस पौंड ठीक रहेगा?"

लकड़हारे ने सौदा किया — "आधा टन ठीक रहेगा। चलो सौदा पक्का।"

भालू बोला — "आधा टन तो बहुत होता है।"

[24] Translated for the words "Four Hundred-weight". Hundred weight normally equals to one man's weight which is normally 80 pounds, so four hundred-weight should equal to roughly 320 pounds.

लकड़हारा फिर बोला — "और उसमें केसर[25] भी तो पड़ती है।"

भालू ने एक बार फिर से अपने होठ चाटे और लालच और खुशी से अपनी ऑखें चमकायीं। फिर बोला — "तो ठीक है सौदा पक्का। तुम अब जल्दी से घर चले जाओ और अपनी पत्नी से कहना कि वह खिचड़ी तैयार करके गर्म रखे मैं भी बस तुम्हारे पीछे पीछे ही पहुॅचता हूॅ।"

लकड़हारा बहुत खुश होता हुआ तुरन्त ही अपने घर की तरफ दौड़ गया। घर पहुॅच कर वह अपनी पत्नी से बोला कि किस तरह उसने एक भालू से आधा टन लकड़ी के लिये उसको खिचड़ी खिलाने का सौदा किया है।

अब उसकी पत्नी तो इस इतने अच्छे सौदे के बारे में कुछ कर नहीं सकती थी पर अपने जुआरी स्वभाव के अनुसार वह इस सौदे से खुश नहीं थी।

सो उसने अपने पति को डॉटना शुरू किया कि उसने इस बात का सौदा तो किया ही नहीं कि वह भालू कितनी खिचड़ी खायेगा। क्योंकि इससे पहले कि हम लोग पहली बार ही अपनी खिचड़ी लें वह तो एक दो बार में ही सारी खिचड़ी खा जायेगा।

[25] Translated for the word "Saffron". Saffron is the dried filaments of saffron flowers. A few strands give nice color and flavor to the dish. Saffron is famous from Kashmir.

अब यह बात तो लकड़हारे के दिमाग में आयी ही नहीं थी। यह सुन कर तो वह पीला पड़ गया। अब वह क्या करे। उसने कुछ सोच कर कहा — "तो ऐसा करते हैं कि हम लोग खिचड़ी पहले खा लेते हैं।"

सो दोनों खिचड़ी खाने के लिये जमीन पर बैठ गये। खिचड़ी का पीतल का बरतन जिसमें उसने खिचड़ी बनायी थी अपने दोनों के बीच में रख लिया और जितनी जल्दी जल्दी हो सकता था खिचड़ी खानी शुरू कर दी।

लकड़हारे ने अपने मुँह में खिचड़ी भरते हुए बोला — "इसमें से कुछ खिचड़ी भालू के लिये भी छोड़ने की याद रखना।"

लकड़हारे की पत्नी ने भी अपने मुँह में खिचड़ी भरते हुए कहा — "हॉ हॉ यकीनन।"

उसने फिर से अपने मुँह में खिचड़ी भरते हुए कहा — "भालू को याद रखना।"

बूढ़ा भी फिर से मुँह भर कर खिचड़ी खाते हुए बोला — "हॉ हॉ बिल्कुल। उसे हम कैसे भूल सकते हैं।"

इस तरह से वे दोनों एक दूसरे को भालू को न भूलने की याद दिलाते हुए खिचड़ी खाते रहे जब तक कि खिचड़ी का पीतल का बरतन बिल्कुल खाली नहीं हो गया।

खा पी कर लकड़हारा बोला — "अब क्या करें। यह सब तुम्हारी गलती है तुम कितना सारा खाती हो।"

पत्नी ने गुस्से से डॉटा — "क्या कहा तुमने। यह सब मेरी गलती है? अरे तुमने मुझसे दोगुनी खिचड़ी खायी है।"

"नहीं मैंने नहीं खायी।"

"हॉ हॉ तुम्हीं ने खायी है। आदमी औरतों से हमेशा ही ज़्यादा खाते हैं।"

"नहीं वे नहीं खाते।"

"हॉ वे खाते हैं।"

लकड़हारा बोला — "खैर अब लड़ने से कोई फायदा नहीं। खिचड़ी तो सारी की सारी खत्म हो गयी अब भालू तो बहुत नाराज होगा।"

लालची बुढ़िया बोली — "अब इससे तो क्या फर्क पड़ता है कि भालू लकड़ियॉ ले कर आता है या नहीं। पर मैं तुम्हें बताती हूॅ कि अब तुम क्या करो।

हमको अपने घर में खाने का सब सामान ताले में रख देना चाहिये खिचड़ी का बरतन आग के पास छोड़ देना चाहिये और हम लोगों को अपने ऐटिक[26] में छिप जाना चाहिये। जब भलू हमारे घर आयेगा तो वह सोचेगा

[26] Translated for the word "Garret". Attic is a small room on the top floor of the house – see its picture above.

कि हम लोग तो बाहर गये हैं और उसके लिये खाना यहाँ छोड़ गये हैं।

फिर वह लकड़ियों का गट्ठर नीचे रखेगा और घर के अन्दर आयेगा। और यह भी ठीक है कि जब वह अन्दर आ कर खिचड़ी का बरतन खाली देखेगा तो घर में कुछ चीज़ों को इधर उधर करेगा तोड़ेगा फोड़ेगा। पर वह कुछ ज़्यादा शरारत नहीं कर सकता।

और मुझे लगता नहीं कि वह इतना भारी लकड़ियों का गट्ठर वापस ले जाने की भी परेशानी मोल लेगा।"

सो इस प्लान के अनुसार उन्होंने अपना सारा खाना ताले में बन्द किया खिचड़ी का बरतन चूल्हे के पास रखा और जा कर ऐटिक में छिप गये।

इस बीच बेचारा भालू को उतने बड़े लकड़ी के गट्ठर के बोझ को इकट्ठा करने में ही काफी देर लग गयी। आखिर वह उसको ले कर लुढ़कता पुढ़कता किसी तरह लकड़हारे के घर की तरफ चला आ रहा था।

वह उसके घर में घुसा तो उसने देखा कि खिचड़ी का पीतल का बरतन चूल्हे के पास रखा है। यह देख कर उसने अपना बोझ उतार कर नीचे रख दिया और जा कर उस बरतन में झाँका। उफ़ वह कितना नाराज हुआ जब उसने देखा होगा कि बरतन तो खाली पड़ा है।

उसमें एक भी दाना चावल का नहीं था। एक छोटा सा टुकड़ा दाल का भी नहीं था। पर उसमें से खुशबू बहुत अच्छी आ रही थी जैसी कि उसने पहले कभी नहीं सूँघी थी। वह गुस्से और नाउम्मीदी की वजह से रो पड़ा।

वह वहाँ से बहुत नाराज हो कर सारे घर में इस उम्मीद में घूम आया कि शायद उसको कोई और खाना कहीं हाथ लग जाये। पर ऐसा नहीं हुआ। लकड़हारे और उसकी पत्नी ने पहले से ही सारी खाने की चीज़ें ताले में बन्द करके रख दी थीं।

सो उसने पहले तो यह सोचा कि वह अपना लकड़ी का गट्ठर वहाँ से लिये चलता है पर जैसा कि उस चालाक पत्नी ने सोचा था जब वह उसको उठाने लगा तो बदला लेने के लिये उसकी ज़रा भी परवाह नहीं की।

लेकिन उसने खिचड़ी का बरतन उठाते हुए अपने आप से कहा "मैं यहाँ से खाली हाथ वापस नहीं जाऊँगा अगर मैं खिचड़ी नहीं खा सका तो क्या हुआ कम से कम मैं उसकी खुशबू तो सूँघता रहूँगा।"

सो जैसे ही वह बरतन उठा कर बाहर जाने लगा तो उसकी निगाह पास में खड़े सुनहरी नाशपाती के पेड़ पर पड़ गयी। उनको देख कर उसके मुँह में पानी भर आया क्योंकि उसको बहुत ज़ोर की भूख लगी थी और वे नाशपातियाँ मौसम की पहली पहली नाशपातियाँ थीं।

एक पल में ही वह लकड़हारे के मकान के चारों तरफ लगी दीवार पर चढ़ गया और वहॉ से फिर वह पेड़ पर चढ़ गया। वहॉ जा कर उसने उस पेड़ की सबसे पकी और सबसे बड़ी नाशपातियॉ तोड़ कर उन्हें खाना शुरू कर दिया कि उसके दिमाग में एक विचार कौंधा।

"अगर मैं इन नाशपातियों को तोड़ कर घर ले जाऊॅ तो मैं इनको दूसरे भालुओं को भी दे सकता हूॅ और उससे आये पैसे से खिचड़ी खरीद सकता हूॅ। यह तो मेरे लिये सबसे अच्छा सौदा रहेगा।" बस यह बात दिमाग में आते ही उसने जल्दी जल्दी पकी नाशपातियॉ तोड़नी शुरू कर दीं।

नाशपातियॉ तोड़ तोड़ कर वह खिचड़ी वाले बरतन में रखता जाता था। पर जब भी वह किसी कच्ची नाशपाती को देखता तो वह अपना सिर ना में हिलाता और कहता कि "इसे कौन खरीदेगा पर फिर भी इसे बरबाद क्यों करना।" और कह कर उसे वह अपने मुॅह में डाल कर बुरा सा मुॅह बना कर खा जाता चाहे वह कितनी भी खट्टी क्यों न हो।

इतनी देर से लकड़हारे की पत्नी अपने दरवाजे की झिरी से भालू के कारनामों को देख रही थी। इस डर से कि कहीं उसका वहॉ छिपे रहने का भेद न खुल जाये वह वहॉ सॉस रोके खड़ी थी।

पर अफसोस उसे अस्थमा की बीमारी थी और उसको जुकाम भी हो रखा था सो वह अपने आपको बहुत देर तक न रोक सकी।

जैसे ही खिचड़ी का बरतन सुनहरी नाशपातियों से ऊपर तक लबालब भरा कि उसको एक बहुत ज़ोर की छींक आयी। आक छीं।

भालू को लगा जैसे किसी ने उसके ऊपर बन्दूक चला दी हो उसने वह बरतन उसके मकान के ऑगन में छोड़ा और जितनी तेज़ भाग सकता था जंगल की तरफ भाग गया।

इस तरह से लकड़हारे की पत्नी को लकड़ी भी मिल गयी खिचड़ी भी मिल गयी और ढेर सारी पकी हुई पीली पीली बड़ी बड़ी नाशपातियॉ भी मिल गयीं।

10 बहुत सारे बच्चों की दादी[27]

भालू की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के कैनेडा देश की लोक कथाओं से ली है। इस कथा को वहॉ के ज्यू बच्चे बड़े शौक से कहते सुनते हैं। तो लो तुम भी पढ़ो उनकी यह लोक कथा और आनन्द लो उसका।

बहुत पुरानी बात है कि एक दादी अपने बहुत सारे बच्चों के साथ रहती थी। एक दिन दादी को जंगल से लकड़ियॉ इकट्ठा करने जाना था तो उसने अपने बच्चों से कहा कि कोई भी आये तो वे दरवाजा न खोलें।

खास तौर पर उसने उनको एक बड़े भालू के बारे में सावधान किया क्योंकि हालॉकि वह भालू जंगलों में घूमता रहता था फिर भी वह अक्सर घरों तक भी आ जाता था।

सब कुछ समझा कर दादी तो जंगल चली गयी और इधर बच्चों ने अपने घर की सारी खिड़कियॉ बन्द कर लीं और दरवाजा भी बन्द करके वे घर में छिप कर बैठ गये।

[27] Grandmother of Many Children – a folktales of Canadian Jews who migrated from Poland and Russia and inhabited in Toronto and Montreal of its Ontario State.

एक आलमारी के ऊपर बैठ गया। दूसरा आलमारी के अन्दर बैठ गया। एक बिछौने के ऊपर बैठ गया तो एक बिछौने के नीचे बैठ गया। एक ओवन में छिप गया।

एक चिमनी के ऊपर चला गया तो एक चिमनी के नीचे बैठ गया। परन्तु एक छोटे बच्चे हेशैला[28] को छिपने की कोई जगह नहीं मिली तो वह एक बोतल के अन्दर छिप कर बैठ गया।

आखिर वह बड़ा भालू घूमता घामता उधर आ निकला। उसने देखा कि दादी आज लकड़ियॉ लेने जंगल गयी है और आज बच्चे घर में अकेले हैं तो आज उन बच्चों को खाया जाये।

बस वह दादी के घर चल दिया। उसने जा कर दादी के घर का दरवाजा खटखटाया — "बच्चों, दरवाजा खोलो।"

जब कोई भी नहीं बोला तो उसने फिर से आवाज लगायी — "बच्चों, दरवाजा खोलो। मैं तुमको ब्लैक बैरी[29] दूँगा।"

इस पर बच्चे बोले — "नहीं हमें नहीं चाहिये तुम्हारी ब्लैक बैरी, हमारे पास ब्लैक बैरी हैं।"

[28] Hayshella – name of the youngest child

[29] Black Berry – a kind of berries like fruit. See the picture of black berries in the above picture. They are grainy ones and big.

भालू फिर बोला — "बच्चो बच्चो, दरवाजा खोलो, मैं तुम्हें ब्लू बैरी[30] दूँगा।"

बच्चे बोले — "नहीं हम दरवाजा नहीं खोलेंगे। हमें नहीं चाहिये तुम्हारी ब्लू बैरी। हमारे पास ब्लू बैरी भी हैं।"

यह सुन कर भालू एक लोहार के यहाँ चला गया और अपनी पूँछ में एक लोहे का टुकड़ा लगवा लाया। इस बार वह बच्चों से बोला — "बच्चों बच्चों, अगर तुम दरवाजा नहीं खोलोगे तो मैं दरवाजा तोड़ कर अन्दर आ जाऊँगा।"

बच्चे बोले — "हम तुमसे नहीं डरते ओ भालू। हम अपनी दादी का कहना मानते हैं।"

यह सुन कर भालू ने गुस्से में आ कर अपनी पूँछ दरवाजे पर ज़ोर से मारी तो दरवाजा टूट गया और भालू घर के अन्दर पहुँच गया।

उसने बच्चों को घर के अन्दर चारों ओर खोजा और अपना बड़ा सा मुँह खोल कर सब बच्चों को खा गया।

लेकिन भालू बोतल में छिपे छोटे हेशैला को नहीं देख पाया और छोटा हेशैला सब देखता रहा। इसके बाद भालू जंगल की तरफ चला गया।

[30] Blue Berry – a kind of berries like fruit. See them in the picture on previous page, they are very of dark blue black color – smaller and round.

जब दादी जंगल से लौटी तो उसने देखा कि उसका घर तो बिल्कुल शान्त पड़ा है। उसने पुकारा — "बच्चों तुम कहाँ हो?"

जब उसे कोई जवाब नहीं मिला तो वह फिर बोली — "बच्चों तुम कहाँ हो?"

उसे फिर भी कोई जवाब नहीं मिला तो उसने बच्चों को घर में हर जगह ढूँढा। उसने उनको बरामदे में भी देखा पर वहाँ भी कहीं कोई नहीं था।

उसने उनको ऐटिक[31] में देखा पर वहाँ भी कोई नहीं था।

वह बेचारी बार बार पुकारती रही — "बच्चों, मेरे प्यारे बच्चों, तुम कहाँ हो?" पर कहीं से उसको कोई जवाब नहीं मिल रहा था।

इसी समय छोटा हेशैला बोतल से निकल कर दादी की गोद में चला गया और उसने उसको सारी कहानी सुना दी कि कैसे भालू जंगल से आया, कैसे उसने अपनी पूँछ से दरवाजा तोड़ा, फिर कैसे उसने बच्चों का पता लगाया और फिर कैसे वह उन सबको खा गया।

[31] A room or space that is just below the roof of a building and that is often used to store things, but sometimes it is used to live there if it is big enough. Normally it is in a conical shape.

दादी ने जब यह सुना तो उसने एक बड़ा चाकू लिया और लोहार के घर ले जा कर उसे खूब तेज़ करा लिया और उसको अपने कपड़ों में छिपा लिया।

फिर वह जंगल में गयी और उसने जंगल में जा कर आवाज लगायी — "बैरेले[32], ओ बैरेले, मेरे पास आओ।"

भालू बोला — "मैं नहीं आता।"

दादी बोली — "बैरेले, अगर तुम मेरे पास आओगे तो मैं तुमको बहुत बढ़िया सी पुडिंग[33] दूँगी।"

भालू फिर बोला — "नहीं मैं नहीं आता।"

दादी फिर बोली — "बैरेले आओ न, मैं तुम्हारे कान भी गुदगुदाऊँगी।"

भालू बोला — "ओह, बस यही तो मुझे बहुत अच्छा लगता है दादी।"

भालू जंगल से बाहर आ गया और दादी की गोदी में सिर रख कर लेट गया। दादी ने भालू के कान सहलाने शुरू कर दिये — पहले दॉया कान, फिर बॉया कान। भालू को धीरे धीरे नींद आने लगी।

[32] Berelle – name of the bear

[33] Pudding is the name of a dish like Kheer of India. It can be of semolina, or rice or sago.

दादी ने मौका देखा और अपने कपड़ों मे से चाकू निकाल कर भालू का पेट फाड़ दिया। भालू का पेट फटते ही दादी के सारे बच्चे उसमें से निकल पड़े।

दादी अपने सब बच्चों को घर ले गयी। उसने उन सबको मल मल कर नहलाया, साफ कपड़े पहनाये, बाल बनाये, नये जूते और मोजे पहनाये और फिर उन सबको स्कूल भेजा।

इस तरह दादी ने भालू को मार कर अपने बच्चों की जान बचायी।

11 छोटी बूढ़ी दादी[34]

भालू की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका के कैनेडा देश की लोक कथाओं से ली है। इस कथा को वहॉ के ज्यू बच्चे बड़े शोक से कहते सुनते हैं। तो लो तुम भी पढ़ो उनकी यह लोक कथा और इसका आनन्द लो।

एक छोटी बूढ़ी दादी एक जंगल के किनारे के पास रहती थी। वह आस पास के शैतान बच्चों को ठीक से बरताव करना सिखाती थी।

एक दिन एक मॉ अपनी छोटी सी बेटी को दादी के पास ले कर आयी और बोली — "मॉ, मेरी बेटी को भी कुछ सिखा दो यह मेरे घर के कामों में बिल्कुल भी सहायता नहीं करती।"

दादी मुस्कुरायी और बोली — "ठीक है इसे छोड़ जा मेरे पास। मैं सिखा दूँगी।" बच्ची की मॉ चली गयी और दादी ने बच्ची को सिखाना शुरू कर दिया।

अगले दिन वे दोनों जंगल में लकड़ियॉ चुनने गये। उनके जाने के बाद एक छोटा भालू दादी की झोंपड़ी के पास आया और उसके आस पास चक्कर काटने लगा।

[34] The Little Old Grandmother – a folktale of Canadian Jews who migrated from Poland and Russia and settlted in Toronto and Montreal towns of its Ontario State.

इतने में ही एक छोटा कुत्ता आ गया और भालू से बोला — "छोटे भालू, तुम इस झोंपड़ी के आस पास चक्कर क्यों काट रहे हो?"

छोटा भालू बोला — "तुम्हें इससे क्या? तुम चाहो तो तुम भी चक्कर काट लो।" और फिर दोनों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

इतने में एक छोटा हिरन उधर आ निकला और उन दोनों से बोला — "ओ छोटे भालू और छोटे कुत्ते, तुम लोग दादी की झोंपड़ी के आस पास क्यों घूम रहे हो?"

भालू और कुत्ते ने जवाब दिया — "तुम्हें इससे क्या, तुम चाहो तो तुम भी घूम सकते हो।" और फिर तीनों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ घूमने लगे।

इतने में एक मुर्गा आया और उसने उन तीनों से पूछा — "छोटे भालू, छोटे हिरन और छोटे कुत्ते, तुम सब दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर क्यों काट रहे हो?"

तीनों बोले — "तुम चाहो तो तुम भी आ जाओ। तुमको कौन मना कर रहा है।" और इस तरह फिर चारों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

इतने में एक केटली का ढक्कन उधर से गुजरा। उन सबको इस तरह से चक्कर काटते देख कर उसने उनसे पूछा — "ओ छोटे भालू, छोटे कुत्ते, छोटे हिरन, और मुर्गे, आप सब लोग इस तरह दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर क्यों काट रहे हैं?"

वे सब एक आवाज में बोले — "तुम्हें इससे क्या, तुम चाहो तो तुम भी चक्कर काट लो।" सो अब पॉचों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

इतने में एक पिन और कोलतार आये और उन पॉचों को इस तरह चक्कर काटते देख कर आश्चर्य से पूछने लगे — "ओ छोटे भालू, छोटे कुत्ते, छोटे हिरन, मुर्गे और केटली के ढक्कन। आप सब लोग इस तरह दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर क्यों काट रहे हैं?"

वे सब फिर एक साथ बोले — "तुम्हें इससे क्या लेना देना है तुम चाहो तो तुम भी आ कर चक्कर काट लो न।" सो अब वे सातों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

चक्कर काटते काटते उन सातों को शाम हो गयी। अब उन सबको नींद आने लगी। दादी अभी तक घर नहीं लौटी थी सो वे दादी की झोंपड़ी में घुस कर सोने की जगह तलाश करने लगे।

छोटा भालू दादी के बिस्तर पर सो गया। छोटा कुत्ता दादी के पालने में सो गया। छोटा हिरन दादी के ओवन के ऊपर चढ़ गया। मुर्गा उड़ कर अलमारी के ऊपर बैठ गया।

केटली का ढक्कन चिमनी में ऊपर चढ़ गया और कोलतार दियासलाई की डिबिया में दुबक कर बैठ गया। पिन को समझ में नहीं आया कि वह कहॉ जाये सो वह एक तौलिये में लग कर बैठ गयी।

उसी समय दादी और वह लड़की जंगल से लकड़ी ले कर वापस लौटे और सोने की तैयारी करने लगे। जब वे बिस्तर में घुसने की कोशिश कर रहे थे तो भालू ने उनको अपना पैर मार कर इतना डरा दिया कि वे दोनों कूद कर वहॉ से हट गये।

उन्होंने पालने में घुसने की कोशिश की तो वहॉ से कुत्ता भौंका और उसने उनको काट लिया। वे चिल्लाये — "कौन हो तुम?"

फिर उन्होंने ओवन के ऊपर जगह ढूँढी तो वहॉ से छोटे हिरन ने उनको डरा दिया। दादी स्टोव के पास अपने आपको गरम करने के लिये गयी तो ऊपर से केटली का ढक्कन उसके सिर पर गिर पड़ा।

दादी डर गयी और बोली — "आज मेरी झोंपड़ी में यह सब क्या हो रहा है। उसने सोचा कि उसे लैम्प जला कर देखना चाहिये कि उसकी झोंपड़ी में आज यह सब क्या हो रहा है।"

सो लैम्प जलाने के लिये उसने दियासलाई की डिबिया उठायी। दादी ने डिबिया खोली ही थी कि उसका हाथ कोलतार से चिपक गया और वह उससे अपना हाथ ही नहीं छुड़ा सकी।

किसी तरह उसने कोलतार से अपना हाथ छुड़ाया और हाथ धोने गयी तो हाथ धो कर जब उसने हाथ पोंछने के लिये तौलिया उठाया तो पिन उसके हाथ में इतनी ज़ोर से चुभी कि वह तो दर्द के मारे चीख ही पड़ी।

इतने में मुर्गा उड़ कर उसके पास आया और बोला — "आज का दिन बहुत बुरा है न दादी।"

इस बात ने तो दादी को इतना ज़्यादा डरा दिया कि वह तो बेहोश हो कर वहीं गिर गयी।

दादी के गिरने से लड़की इतनी ज़्यादा डर गयी कि अपनी मॉ के पास भाग गयी। उस दिन से उसने अपनी मॉ का कहना मानना शुरू कर दिया। मॉ दादी की इस एक दिन की ट्रेनिंग से बहुत खुश थी।

12 चिपमंक और भालू[35]

भालू की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में रहने वाले आदिवासियों में कही सुनी जाती है। इस लोक कथा को पढ़ो और देखो कि एक छोटा सा चिपमंक जानवर इतने बड़े भालू जैसे बड़े और ताकतवर जानवर से अपनी जान कैसे बचाता है।

यह तब की बात है जब जानवर बोला करते थे। उस समय एक भालू इधर उधर घूम रहा था। ऐसा कहा जाता है कि भालू हमेशा अपने बारे में बहुत ऊँचा सोचते हैं। क्योंकि वे बहुत बड़े होते हैं और ताकतवर होते हैं इसलिये सचमुच में ही वे सब जानवरों में कुछ खास ही होते हैं।

सो एक बार यह भालू अपने पंजों से लकड़ी के बड़े बड़े लट्ठों को लुढ़काता हुआ खाने की खोज में चला जा रहा था। इस भालू को अपने ऊपर बहुत भरोसा था सो चलते चलते वह बोला — "मैं जो चाहे कर सकता हूँ।"

तभी एक छोटी सी आवाज आयी — "ऐसा है क्या?"

[35] Chipmunk and Bear – a folktale from Native Americans of North America – Iroquois people. Adapted from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/ChipmunkandBear-Iroquois.html

भालू ने नीचे देखा तो वहाँ एक छोटा सा चिपमंक[36] एक गड्ढे में से झाँक रहा था।

भालू बोला — "हाँ यह ठीक है। मैं जो चाहे वह कर सकता हूँ।"

कह कर उसने अपना एक पंजा आगे बढ़ाया और उससे एक बड़ा सा लट्ठा लुढ़का दिया और बोला — "देखो यह मैंने कितनी आसानी से कर दिया। मैं सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ। सारे जानवर मुझसे डरते हैं।"

चिपमंक ने पूछा — "क्या तुम सुबह को उगते हुए सूरज को भी उगने से रोक सकते हो?"

भालू ने कुछ पल सोचा और बोला — "मैंने कभी इस बात की कोशिश नहीं की पर मुझे यकीन है कि मैं उगते हुए सूरज को भी रोक सकता हूँ।"

चिपमंक ने पूछा — "क्या तुम यह बात यकीन के साथ कह सकते हो?"

"हाँ मैं यह बात यकीन के साथ कह सकता हूँ। तुम देखना कल सूरज नहीं उगेगा। मैं भालू यह कहता हूँ।" और भालू यह कह कर पूर्व की तरफ मुँह करके बैठ गया।

[36] Chipmunk is a squirrel-like animal with stripes mostly found in North America. See its picture above.

उसके पीछे पश्चिम में सूरज रात के लिये डूब गया पर भालू वही बैठा रहा। चिपमंक रात को आराम से सोने के लिये अपने बिल में चला गया। वह यह सोच सोच कर आनन्द ले रहा था कि भालू भी कितना बेवकूफ जानवर है। यह नहीं जानता कि यह क्या कह रहा है। भला उगते हुए सूरज को कौन रोक सकता है।

सारी रात भालू वहीं बैठा रहा।

सुबह हुई तो पहली चिड़ियों ने चहचहाना शुरू किया और पूर्व मे पहली रोशनी चमकी जो सूरज निकलने से पहले चमकती है।

भालू बोला — "आज सूरज नहीं उगेगा।"

उसने चमकती हुई रोशनी की तरफ देखा और फिर बोला — "आज सूरज नहीं उगेगा।"

खैर सूरज तो उगा जैसे रोज उगता है। यह देख कर भालू तो बहुत परेशान हुआ पर चिपमंक बहुत खुश हुआ। वह हॅसा और हॅसता ही रहा फिर बोला — "सूरज भालू से ज़्यादा ताकतवर है।"

चिपमंक को इसमें इतना आनन्द आया कि वह अपने बिल में से बाहर निकल आया और चारों तरफ घूम घूम कर गोल गोल नाचने गाने लगा —

सूरज उग आया, सूरज उग आया
भालू बहुत दुखी है, पर सूरज तो उग ही आया

भालू तो वहॉ बहुत ही दुखी बैठा हुआ था जबकि चिपमंक खुशी से गाये जा रहा था, नाचे जा रहा था और इतना खुश था कि जमीन में लोट भी रहा था।

तभी भालू ने जितनी देर में मछली पानी में से निकलती है उससे भी जल्दी अपना पंजा उठाया और उसे जमीन में दे मारा। वह बोला — "शायद मैं सूरज को उगने से नहीं रोक सकता पर अब तुम दूसरा सूरज नहीं देखोगे।"

चिपमंक बोला — "ओह भालू नहीं। तुम सबसे ज़्यादा ताकतवर हो। तुम सबसे ज़्यादा तेज़ हो। तुम सब जानवरों में सबसे अच्छे हो। मैं तो बस तुमसे यों ही मजाक कर रहा था।"

पर भालू ने अपना पंजा वहॉ से नहीं हटाया।

चिपमंक फिर बोला — "ओ भालू, तुम अगर मुझे मार डालोगे तो ठीक करोगे। मुझको तो मरना ही चाहिये। पर मुझे खाने से पहले तुम मुझे एक बार, बस आखिरी बार भगवान की प्रार्थना तो कर लेने दो।"

भालू बोला — "करो करो, अपनी प्रार्थना जल्दी से करो। अब तुम्हारा आसमान में चलने का समय आ गया है।"

चिपमंक बोला — "ओ भालू, मैं मरना तो चाहता हूँ पर तुम मुझको इतना ज़्यादा दबा रहे हो कि मैं सॉस भी नहीं ले पा रहा। मैं ठीक से बोल भी नहीं पा रहा।

अगर तुम अपना पंजा ज़रा सा ऊपर उठा लो तो मैं कम से कम सॉस तो ले सकता हूँ और उस भगवान की प्रार्थना कर सकता हूँ जिसने बड़े अक्लमन्द और ताकतवर भालू को बनाया और चिपमंक जैसे बेवकूफ, कमजोर और छोटे से चिपमंक को बनाया।"

यह सुन कर भालू ने अपना पंजा उठा लिया। हालॉकि उसने अपना पंजा बहुत जरा सा ही उठाया था पर उतनी जरा सी जगह ही उस छोटे से चिपमंक के वहॉ से भाग जाने के लिये काफी थी।

वह तुरन्त ही अपने बिल की तरफ दौड़ गया। भालू ने अपना पंजा फिर से चिपमंक के ऊपर रखने को गिराया पर चिपमंक तो यह जा और वह जा।

भालू इतना तेज़ नहीं था कि वह उस भागते हुए चिपमंक को पकड़ सकता पर फिर भी उसके पंजों के नाखूनों की खराशें उसकी पीठ पर खिंच गयीं और तीन पीली धारियॉ छोड़ गयीं।

आज तक चिपमंक की पीठ पर वे धारियॉ हैं और वे उसको हमेशा याद दिलाती हैं कि किसी के साथ क्या होता है जब कोई छोटा किसी बड़े की हॅसी उड़ाता है।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
https://www.rachanakar.org/2016/07/1100.html

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html

6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html
7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–**4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–**5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–**6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
13 इटली की लोक कथाऐं–**9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
14 इटली की लोक कथाऐं–**10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
15 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
16 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
17 पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/06/blog-post_61.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**